इन्दिरा-गौरवम्

(संस्कृत-काव्य)

कवि-कृत हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद-सहित

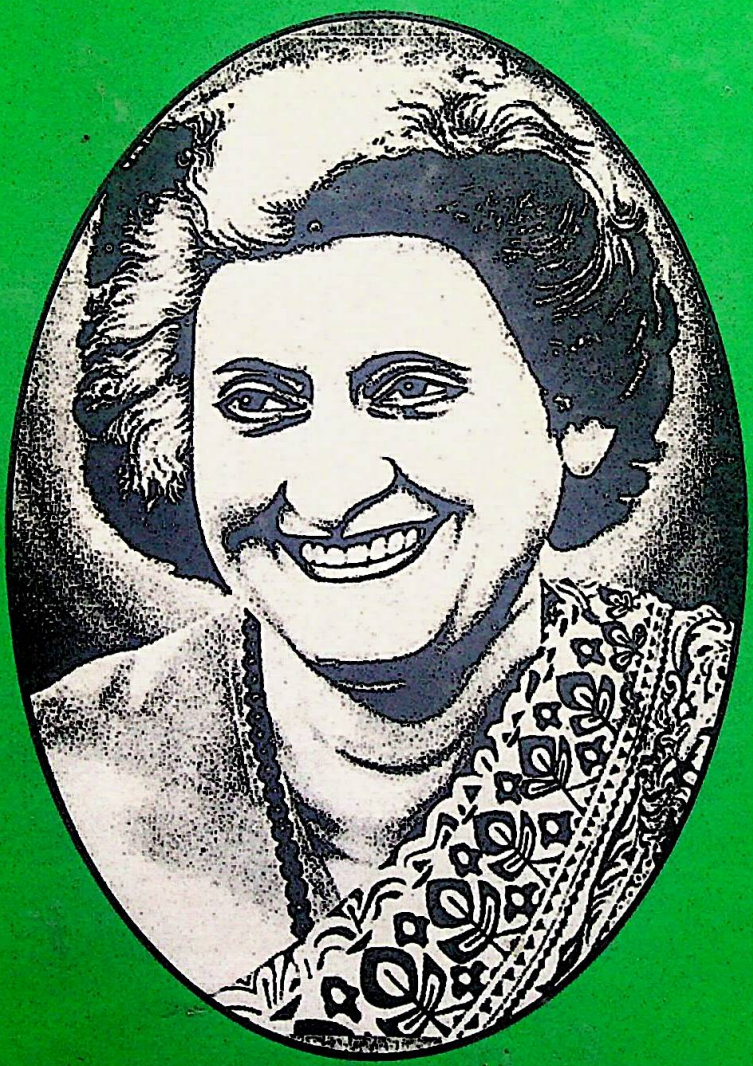

डा० शिवप्रसाद भारद्वाज

2.1

आशुतोष अवस्थी

श्री [illegible] (उ॰प्र॰)

आशुतोष अवस्थी

इन्दिरा-गौरवम्

(संस्कृत-काव्य)

कवि–कृत हिन्दी–अंग्रेजी अनुवाद–सहित

रचयिता –

डा० शिव प्रसाद भारद्वाज

इन्दिरा-गौरवम्

(संस्कृत-काव्य)

कवि-कृत हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद-सहित

रचयिता : डा० शिव प्रसाद भारद्वाज

प्रकाशक : जयश्री ट्रस्ट
310 बसंत विहार, देहरादून - 248001
दूरभाष (0135-2764026)

प्रकाशन वर्ष : सन् 2004

मूल्य : पेपर बैक : रु० 50.00
सजिल्द : रु० 100.00

डिजाइन : **Xs Communications Pvt. Ltd. Dehradun**
Ph. No. 0135-2659913, 2655831-32 Ext. 233

मुद्रक : शब्द-संस्कृति पब्लिकेशन प्रा० लि०
74 ए, न्यू कनॉट प्लेस, देहरादून
फोन : 2713982

निवेदन

संस्कृत साहित्य में महाकाव्यों की भाँति शतक काव्यों की परम्परा भी बड़ी लोकप्रिय रही है। ये अधिकतर मुक्तक काव्य होते थे। ये शतक सात या तीन के सङ्ग्रह के रूप में भी पाये जाते हैं। संस्कृत में दुर्गा सप्तशती, गोवर्धन की आर्यासप्तशती, प्राकृत में हाल की गाहा सत्तसई बहुत प्रसिद्ध हैं। तीन शतकों के संग्रहों में भर्तृहरि के शतक व पण्डितराज जगन्नाथ का भामिनी विलास विख्यात हैं। मैंने एक शतक के साथ–2 शतक वाले काव्य भी लिखे हैं। जिनमें एक प्रस्तुत 'इन्दिरागौरवम्' पाठकों के हाथ में प्रस्तुत किया जा रहा है। इसकी विशेषता यह है कि यह मुक्तक काव्य न होकर प्रबन्ध काव्य है और पद्यसंख्या दो सौ ग्यारह है।

इसमें संक्षेप से स्वर्गीय प्रधानमन्त्री इन्दिरा गाँधी की जीवनी प्रस्तुत की गई है। इन्दिरा गाँधी ने जब भारत में आपात काल की घोषणा की थी, उस समय अनेक बुद्धिजीवी अत्याचार के शिकार हुए थे और कारागृह में भी डाले गये। उनमें कुछ ने संत्रस्त होकर इन्दिरा की प्रशस्तियां रची थीं। परन्तु प्रस्तुत काव्य की रचना स्व० इन्दिरा गांधी की हत्या के पश्चात् नवम्बर 1984 और फरवरी 1985 के मध्य हुई। इसकी प्रेरणा भी जिस प्रकार उनकी हत्या हुई, उस की प्रतिक्रियास्वरुप उत्पन्न समवेदना से मिली। इसमें इन्दिरा के जन्म, शिक्षा, विवाह स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग, प्रधानमन्त्री बनने पर भारत की उन्नति के लिये किये प्रमुख कार्य, बंगला देश के निर्माण में सहायता, आपात स्थिति की घोषणा, पंजाब में उग्रवाद का उदय और उसके दमन के फलस्वरूप उसकी हत्या इन घटनाओं का वर्णन है। प्रसंगवश ब्लू स्टार आपरेशन की चर्चा भी हुई है। पंजाब के उग्रवाद में सम्पूर्ण सिख समाज का योगदान नहीं था। इसलिये उग्रवाद की चर्चा को सिख बन्धुओं की आलोचना न माना जाय। क्योंकि उस आन्दोलन से उन सिखों को भी जीवन और धन की हानि उठानी पड़ी जिनका इसमें कोई भी योगदान न था। तब भला सारे समाज को दोषी कैसे माना जा सकता है?

यह काव्य प्रकाशन की सुविधा न होने से इतने वर्षो से अप्रकाशित पड़ा रहा। यह एक लोकप्रिय नेत्री के जीवन से सम्बद्ध होने के कारण ऐसे सज्जनों के हाथों में भी जा सकता है जो संस्कृत का ज्ञान नहीं रखते। उनकी सुविधा के लिए इसे हिन्दी व अंग्रेजी अनुवाद के साथ प्रकाशित किया जा रहा है। इसके अनुवाद के प्रसंग में प्रसिद्ध साहित्यकार और मनीषी कर्नल (सेवानिवृत्त) डा० अचलानन्द जी जखमोला के अमूल्य सुझाव प्राप्त हुए। उनका मैं हृदय से आभारी हूँ।

इसके प्रकाशन का उपक्रम मेरे कनिष्ठ जामाता आयुष्मान् अनिल उनियाल ने कम्प्यूटर पर कम्पोज की व्यवस्था करके किया। इस कार्य में उन्हें बहुत भागदौड़ करनी पड़ी। पर अभी प्रकाशन की व्यवस्था कुछ नहीं हो पाई थी। सौभाग्य से जयश्री ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री बुद्धिवल्लभ जी थपलियाल ने इसके प्रकाशन का भार अपने कन्धों पर लिया। जयश्री ट्रस्ट, देहरादून की प्रतिष्ठित संस्था है जो कि प्रतिवर्ष हिन्दी व गढ़वाली के कवियों को सम्मानित करती है। मैं इन सबका हृदय से आभारी हूँ।

शिव प्रसाद भारद्वाज

इन्दिरा-गौरवम्

राष्ट्रस्य सुप्रतीकं भारत–भारती शिवप्रसादा[1] च।
ओजस्विनीन्दिरा[2] सा हितमाधुर्या[3] चिरं जयतु।।१।।

भारत राष्ट्रकी (संस्कृति व राष्ट्रीयता का) चिह्न, भारत की वाणी व संस्कृत भाषा और सरस्वती तथा ओज और उत्साह पर आश्रित लक्ष्मी देवी की सदा जय हो, जिस का अनुग्रह कल्याणकारी है और जो अन्तर में मधुरता धारण किये है।

May always be victorious Goddess Saraswati who is symbol of Indian nation, presiding deity of wisdom and cultural language of Bharata, sweet in nature, as well as Goddess Lakshmi depending upon might, and courage and sweetnatured to her favourites.

मुक्तारागविबोधितसंज्ञागुणशीलविभवविभवस्य।
विधिवादिवर्गमौलेः कुलमद्वयतः प्रसाधयतः।।२।।

मोती और लाल इन शब्दों से जिन के नाम, विशेषता, स्वभाव तथा ऐश्वर्य का ज्ञान हो जाता है, ऐसे वकीलों में शिरोमणि मोतीलाल नेहरू के वंश को इकलौता पुत्र होने के कारण अलंकृत करने वाले– (चतुर्थ श्लोक से सम्बद्ध)

(Who) adorned the family of great lawyer Moti Lal Nehru being his only son, whose name, characteristic, nature and enormous wealth are known through the words like मोती and लाल meaning pearl and ruby.

रलं शोणोपलमथ वैकटिकं च स्वसंज्ञया गदतः।
स्फूर्त्याथ कर्मशक्त्या युवसु जवं नेतुराहरतः[4]।।३।।

जिन का नाम जवाहरात, पद्मराग मणि तथा जौहरी का वाचक था, जो अपनी फुर्ती और कर्मठता से नवयुवकों में कुछ कर दिखाने के लिए वेग भरते थे।

Whose name indicated jewels, ruby and jeweller, who inspired the youth to be active through his own vigour & activity

---

1. यह शब्द प्रस्तुत काव्य के रचयिता का नाम भी सूचित करता है। 2. यह काव्य के वर्ण्य चरित्र इन्दिरा गाँधी का भी संकेत करता है। 3. एक काव्य गुण। 4. यह संस्कृत के 'जव–आहर' इन दो शब्दों का यौगिक अर्थ है।

भारतनवेतिहासे स्वर्णाक्षरलिखितचरितमहिमवतः।
नेतुर्जवाहरस्य स्मरति न को नाम नाम बत!।।४।। (विशेषकम्)

भला कौन ऐसा होगा जो कि भारत के नये इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में लिखे जीवन चरित और गौरव वाले महान नेता जवाहर लाल नेहरू को स्मरण न करता हो।

Who does not remember the great leader Jawahar Lal Nehru whose life sketch and grandeur are noted in the history of modern India in golden script.

कमला[1] शारदया सह यत्र वसन्ती न मत्सरं भेजे।
कौल[2]प्रभाव एषोऽथवा स्वरूपानुभावो नु।।५।।

जिन के पास लक्ष्मी सरस्वती के साथ रहती हुई भी (सौतिया) डाह का अनुभव नहीं करती थी, न जाने यह वंश के कारण संभव हुआ या उनकी माता स्वरूप रानी के प्रभाव से।

Coincidence of Lakshmi (the goddess of fortunes) with Saraswati (Goddess of wisdom) in whose possession did not create any feeling of jealousy between them (as commonly found in co-wives); it is not certain to say if it became possible due to the influence of his family or his mother (Swarupa Rani Nehru)

सततपुरुषार्थभूमौ नेहरुजे स्यात् कथं नु विश्रमभूः[3]।
तिष्ठन् पुरः सदा यो निनाय लोकं स्व–लक्ष्य–दिशि।।६।।

नित्य उद्यमशील, नेहरू कुल में उत्पन्न उन जवाहर लाल नेहरू के पास कभी विश्राम करने के लिए अवकाश कहाँ था जोकि सब से आगे रह कर अपने उद्देश्य की सिद्धि पाने में लोगों का नेतृत्व करते थे।

Born in the family of Moti Lal Nehru, who had no time to take rest and being at the forefronts, always led the people towards achievement of their goal.

भारतभूमे र्मोक्षं गांधि–विनीतोऽथ दासता–पाशात्।
लिप्सुः कारासु दधौ मोदेनानन्दभवनधियम् ।।७।।

---

1. जवाहर लाल की पत्नी कमला नेहरू का संकेत भी है। 2. जवाहर लाल के कुल का नाम। 3. इसमें जवाहर लाल के आदर्श वाक्य और नारा 'आराम हराम है' का संकेत है।

और जिन्होंने गांधीजी के उपदेश से मातृभूमि की स्वतन्त्रता पाने की इच्छा से (संघर्ष करते हुए दण्डित होने पर) जेल को आनन्द भवन[1] ही माना।

And who, according to the advice of Mohan Das Karmachand Gandhi, joined the struggle for independence of India from British rule and took the prison for his own Anand Bhawana (Accepted imprisonment gladly).

आसन् लगुडाः प्रहताः प्रसूनवर्षाश्च यत्र तुल्यसुखाः।
मह इव बन्धूनखिलान् युयुजे स्वातन्त्र्य–समरे यः।।८।।

(मातृ भूमि की स्वतन्त्रता के लिये किये गये संघर्ष में) जिन्हें (पुलिस की) लाठी की चोटें तथा (जनता द्वारा की गई) फूलों की वर्षा समान रूप से सुख देती थीं। उन्होंने अपने सभी नातेदारों को स्वतन्त्रता के लिये छेड़े युद्ध में उसी प्रकार सम्मिलित कर लिया जैसे कि किसी उत्सव में किया करते हैं।

Who, while fighting for freedom, treated blows with sticks (made by police) and rain of flowers (from the people) alike, moreover, gave impetus to his all kith and kins to join the struggle, as if it were an auspicious occasion.

लब्ध्वाऽपि जन्म वंशे योऽमितलक्ष्मीविलाससुखललिते।
साम्यं लोकेन भजन् सेहे कष्टानि निःस्वानाम्।।९।।

यद्यपि उन्होंने ऐसे कुल में जन्म लिया था जहाँ कि ऐश्वर्य के कारण सभी सुख सुविधाएँ सुलभ थीं, तो भी साधारण जनता के समान रहते हुए गरीबों के से दुःख भी खुशी से झेले।

Althogh he was born in a family where all the means of luxurious life were always at his disposal, still he during that struggle tolerated all the troubles generally faced by the poor.

युद्ध्वा स्वातन्त्र्यार्थं भारतभूमेः समीहिते सिद्धे।
मन्त्रिप्राधान्यकृतं राष्ट्रोदयधूर्वहत्वमगात्।।१०।।

भारतभूमि की (ब्रिटिश शासन से मुक्ति के लिए) संघर्ष करके (स्वतंत्रता–प्राप्ति की) कामना पूर्ण हो जाने पर जिन्होंने प्रधानमंत्री होने के नाते राष्ट्र की सर्वतोमुखी प्रगति का उत्तरदायित्व संभाला।

After long struggle for independence of India, when the goal was achieved, being appionted as the Prime Minister, who undertook the responsibility of nation's upliftment & progress.

---

1. नेहरू जी का पैतृक निवास।

मानवतामात्ररतिं सन्तुष्टं नीरुजं च समवित्तम्।
द्रष्टुं प्रजाजनं यो मेने भूत्यै स्वराष्ट्रस्य।।११।।

जिन्होंने अपने भारत राष्ट्र की समृद्धि के लिए यह आवश्यक माना कि देश की जनता (जाति और सम्प्रदाय की संकीर्ण भावना से ऊपर उठकर) सम्पूर्ण मनुष्य मात्र से प्रेम करे, सब लोग अभावों से ग्रस्त न रहकर अन्न, धन आदि से सम्पन्न रहें, सर्वथा स्वस्थ और आर्थिक विषमता से मुक्त हों।

In order to see his nation prosperous, who thought it essential that the people leaving narrowmindedness, should love all the humanity, should be satisfied with their lots, all may be hale & stout and should have equal wealth.

अविरतविलासलीलालोलितचेतःसु भोगिषु क्व भवेत्।
लोकक्षेमस्य मतिः शोषणदोषैः प्रलिप्तेषु।।१२।।

जो राजा लोग रात दिन विषय भोगों में मस्त रहते हैं, इस कारण अनेक प्रकार के करों से जनता का खून चूसते हैं, उन्हें जनता की भलाई की चिन्ता कैसे हो सकती है।

Kings, who always remain busy with their entertainment and amusement, exploit their people by extracting money through imposing various taxes, can never think about welfare of their subjects.

सीमितकोशा रोषावेशस्पर्धोत्थसमरकलहास्ते।
करतापितलोकहृदो न प्रभवेयुः क्लमं हर्तुम्।।१३।।

(आय के स्रोत कम होने से) उनके खजाने में धन सीमित रहता है, बात–२ में कुपित होकर या प्रतिस्पर्धा से वे आपस में लड़ाई छेड़ देते हैं, अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए तरह–२ के कर लगाकर जनता को सताते हैं, वे उसके कष्टों को कैसे दूर कर सकते हैं।

Financial resources of princes are limited, they easily pick up quarrel with their neighbours with anger (for even a petty cause), teasing their subjects with so many taxes, they can never ease their people from calamities.

जनता निजहितहेतोरिति समनस्त्वं स्वयं न किं दधताम्।
तन्त्रं तदधीनमतो राष्ट्रस्य वरं च यो मेने।।१४।।

ऐसी स्थिति में लोग अपनी भलाई के लिए अपने आप क्यों न एकमत हों, इस विचार से जिन्होंने भारत में जनतन्त्र की स्थापना को ही उचित समझा।

The people for these reasons, should form unanimity among themselves for their common cause (and should be master of their destiny). With this aim who preferred his nation to be a republic.

क्वारोग्यं क्वाथ बलं विभवो वा प्रबलदासतापाशे।
इति सत्यस्य निदर्शनमथ पश्यन् भारतं किल यः।।१५।।

जब देश विदेशी शासन की जकड़ में रहा हो तब भला जनता स्वस्थ, सशक्त और समृद्ध कैसे हो सकती है; जिन्होंने भारत को इस कटु सत्य का जीता–जागता उदाहरण देखते हुए .....।

In a country lying under a foreign rule, there is no possibility of sound health, strength & prosperity, noticing all this in India as an instance .

नानोद्योगान् बहुविधयन्त्रागाराणि कर्मशालाश्च।
विभवप्रसूतिहेतून् कृत्रिमपाथोनिधीन् सुमतिः।।१६।।

बड़ी सूझ बूझ से जिन्होंने इस देश में धनवृद्धि के साधन अनेक प्रकार के उद्योग धन्धों, मिलों व कारखानों तथा कृत्रिम सागरों की स्थापना की।

Who established various industrial units, mills, factories and got built artificial seas across the country.

प्रातिष्ठिपदिह देशे यच्च विदेशेषु सभ्यतामूलम्।
भोगप्रधानमुत वा जीवनमद्यत्व आतनुते।।१७।।

जिनके सहारे विदेशों की विलास–प्रधान सभ्यता पनपी है और जिनसे आज की जीवनशैली विलासमय हो गई है।

Which could prove to be the sources of prosperity of the nation and were the main cause of the civilization of rich countries and had made today's life sophisticated.

स्मरणीयनामशेषां क्षुधमपि राष्ट्रे विधातुकाम इह।
साधनसन्ततिभिर्यश्चक्रे क्रान्तिं कृषिक्षेत्रे।।१८।।

इसके अतिरिक्त इस भारत में फैली भुखमरी को समाप्त कर देने की इच्छा से जिन्होंने अनेक उपायों से खेती में आश्चर्यजनक परिवर्तन किये।

In order to send hunger to oblivion from this country, who thoroughly revolutionized the agriculture here.

सेतुप्रपञ्चनियमितवारिविभूतीश्च सर्वतः सरितः।
योक्तुं भुवः प्रसेचनसंविधये यो मतिं तेने।।१६।।

जिन्होंने (अन्नोत्पादन में वृद्धि के लिए आवश्यक समझकर) स्थान–२ पर बाँध बनाने के द्वारा देश के चारों ओर बहने वाली नदियों का पानी संगृहीत करके खेती के उपयोग में लाने का विचार बनाया।

Moreover, (Considering it essential for growth in agricultural production) who planned to use all the surplus water of different rivers flowing across the country by taming their stream with dams and barrages built upon them.

इरिणानि सूर्वराणि क्षपिततृषो वा मरून् प्रकामरसैः
यःकारयन् नियत्या अधिकारं चाक्षिपद् बहुधा।।२०।।

जिन्होंने सिंचाई के द्वारा बंजर प्रदेशों को उपजाऊ एवं रेतीली भूमि को हरीभरी कराकर अनेक प्रकार से प्रकृति के अधिकार क्षेत्र में हस्तक्षेप किया।

And he interfered in so many ways in the working of nature by turning barren land into fertile ones and quenching thirst of the deserts with the supply of profuse waters.

नूतनरणोपकरणप्रभवभुवनलयविकलहृदं मनुजम्।
कृतवानशोक इव यो निस्त्रासं पञ्चशीलधिया।।२१।।

जिन्होंने अशोक की भाँति पञ्चशील के विचार सम्मुख रखकर नई–नई युद्ध सामग्री के कारण संसार के विनाश की आशङ्का से आतङ्कित मानव जाति को भयमुक्त कर दिया।

Who, like Ashoka, made the mankind free of all fears of total devastation caused by the latest formidable weapons piled by the mighty nations for possible 3rd world war through preaching the principle of Panchasheela.

राष्ट्राणि सन्धिबन्धैर्द्वन्द्वनिपातीनि यः प्रबोध्य पुनः।
मार्गं तटस्थताया अदिशत् क्षेमाय भुवनस्य।।२२।।

तथा जिन्होंने सैनिक सन्धियों के गठबन्धन से गुटों में बँटने वाले राष्ट्रों को (उससे होने वाली हानि समझाकर) संसार के कल्याण के लिए तटस्थ रहने की नीति दिखाई।

(Moreover) who for the welfare of the whole globe had shown the path of adopting the policy of non-alignment to all the nations joining either group through military pacts or treaties.

'जनधनमनोविनाशानामन्त्रयतीह युद्धचर्चापि।
अलमिति तया, दरिद्रान् भरत मनुष्यान् स्व–विभवेन।।२३।।

'क्योंकि इस संसार में लड़ाई की बात चलाना भी मानव जाति और अपार धन का नाश बुलाती है, इसलिये (इन सन्धियों के बहाने उससे बचो, युद्ध–सामग्री पर खर्च न करके, अपने धन से गरीब जनता का पालन पोषण करो।

Even a reference to the war invites vast destruction of the people and wealth, hence, please, do not talk of that and feed the humanity suffering from hunger by making proper use of your enormous wealth.

इत्थं भाविमहारणसम्भावनयाऽस्त्रसङ्ग्रहे निरतान्।
लोके राष्ट्रप्रमुखान् शान्तिकथायाञ्च योऽयुङ्क्त।।२४।।

जिन्होंने आगामी महायुद्ध होने की आशङ्का से हथियार जमा करने में लगे राष्ट्रों के नेताओं को इस परामर्श के द्वारा परस्पर शान्ति स्थापना के लिए बातचीत करने की ओर प्रवृत्त किया।

And who directed thus, all the leaders of other nations who were generally busy with piling deadly weapons, to instead negotiate for perpetual peace on this earth.

यदणुकणानां विघटनमामन्त्रयति प्रसह्य विश्वलयम्।
सुखितभुवन–निर्माणे यस्तत् प्रायुङ्क्त धीरमतिः।।२५।।

तथा जिस स्थिर बुद्धि वाले नेता ने परमाणुओं के खण्डन की उस प्रक्रिया को जो कि सृष्टि का विनाश प्रबल रूप से बुलाती है, सुखी संसार की रचना के लिये प्रयुक्त किया।

Moreover, who wise diverted the process of disunion of atoms deemed to cause destruction of the world, instead towards creation of a happy and pleasant universe.

यमिनो रतिप्रपञ्चे संमोह्य यया पुरा तु निक्षिप्ताः।
तामप्सरसं तपसेऽथोर्जायै यो युयोज बलात्।।२६।।

जो प्राचीन काल में तपस्वियों को विषय भोग में प्रवृत्त करके उनका तप भंग किया करती थी, उसी अप्सरा को जिन्होंने तप (ताप) और शक्ति के उत्पादन को बाध्य कर दिया।

Who forced Apsaras[1] (the first atomic furnace of India) to perform tapas (generate power) and energy) that in the past used to obstruct the penance of sages and attracted them to sex.

नेहरुवंशविभूतेरलसेषु जवाहरस्य कर्मरतेः।
शिशुलालनमुग्धहृदो राजनयेऽ प्यार्यशीलस्य।।२७।।

जो जवाहर लाल नेहरू कुल के रत्न थे, दिन रात कर्मरत रहने से जो आलसियों में भी जोश और फुर्ती भरने से यथार्थ नाम वाले थे, बच्चों से अति प्रेम रखते थे तथा राजनीति में भी साधुता बरतते थे।

Who was the riches of Nehru family, infused vigour even in the idles through his own active nature, who was also fond of playing with children and always maintained nobility even in politics.

तस्यैकला[2] कला किं भारतचन्द्रस्य[3] जनमनोहर्त्री।
प्रियदर्शिनीति संज्ञां लोकेऽन्वर्थामथाश्नुवती।।२८।।
हेलावनतमहेलामहिमानं निदधतीव पौंस्नमुखे।
भारतवर्षमहेलातनयाऽसीदिन्दिरा साऽत्र।।२९।। (युग्मकम्)

जो उस भारत वर्ष के चन्द्रमा की (इकलौती सन्तान होने के कारण) मानो, अकेला अंश, (अपने सौन्दर्य व कार्यो से) सम्पूर्ण जनता के मन को आकृष्ट करने वाली और संसार में 'प्रियदर्शिनी' इस यथार्थ नाम से पुकारी जाती थी। इस भारत में वह भारत भूमि की गौरवमयी पुत्री इन्दिरा नाम की नारी थी जो कि अपने व्यक्तित्व के प्रभाव से स्त्रियों को तिरस्कार की दृष्टि से देखने वाले पुरूषों के मुख से नारी जाति के महत्त्व का गान कराती थी।

There was a lady known as Indira who was an only child of that noble man and looked like a single part of India's moon (Jawahar Lal), she fascinated all the people and bore another accurate name as Priyadarshini for her charming personality; that Indira was born in India, really a daughter of great Indian Soil, who compelled males taking womenfolk lowly in general, to admit greatness of ladies with her personal qualities.

---

१. भारत में स्थापित पहली अणुभट्टी। यहां आशय है कि अणुभट्टी के द्वारा ऊर्जा व गर्मी उत्पन्न की गई। तपस के २ अर्थ हैं – तपस्या व गर्मी (Heat), अप्सरा शब्द के परी और अणुभट्टी दोनों अर्थ हैं।

२. पुराणों के अनुसार चन्द्रमा की १६ कलाएं होती हैं ३. जवाहर लाल जनता में अत्यन्त लोकप्रिय थे, ऐसा उन्होंने 'मेरी कहानी' में स्वयं स्वीकार किया है। चन्द्रमा भी शीतल होने से जनता को प्रिय होता है।

ऋषिशशिखेटमहीमित (1917) वत्सररुद्राङ्क (11) मासि यीशुमते।
दिवसे किलोनविंशे या लेभे सूदयं सदयम्।।३०।।

उसने 1917 ईशवी, नवम्बर मास के 19 दिनाङ्क को प्रसन्नतादायक जन्म पाया।
She was born on 19th November, in 1917 A.D.

कमलालयाङ्ककेलीकलिका या किलकिलाकलालपितैः।
हृदयं भवनञ्च पितुर्विदध आनन्दभवनमेव।।३१।।

जो कि शैशव में अपनी माता कमला नेहरू की गोद में खेलती हुई बाल्यसहज किलकारियों व तोतली बोली से अपने पिता के मन व निवास गृह को सचमुच 'आनन्द भवन' बना देती थी।

Who, while still a baby, used to make the heart and house of her father really `Ananda Bhawana' with her screamings & unclear utterances.

जननी किमचिररुचिरिव न चिरविलासे निजं मनो दधती।
तनयातनुरुदयादिह दयितस्य महोदयं द्रष्टुम्।।३२।।

क्या उसकी माता बिजली की भाँति अधिक न जीकर अपने पति की उन्नति देखने के लिए पुत्री के रूप में पुनः उत्पन्न हुई थी?

As if, her mother who did not live long, took rebirth in the form of her daughter in order to see elevation to high position of her dear husband.

कमलाविलासललिते सुकुले भवनेऽथ पतिगृहे देशे।
मूर्तेन्दिरा भवित्री विहिताऽसाविन्दिरासंज्ञा।।३३।।

वह क्यों कि कमला (कमला नेहरू व लक्ष्मी) से समृद्ध घराने, घर (आनन्द भवन) ओर बाद में ससुराल में तथा देश भर में जीती जागती 'इन्दिरा' (लक्ष्मी) सिद्ध होने वाली थी, इसलिये उसका नाम इन्दिरा रक्खा गया।

She was wisely named Indira (by her parents) as foreseeing her Lakshmi embodied in a wealthy family, house & later on in her in- laws' house and country.

इन्दिन्दिराश्च लोका जगति यदीयान् गुणान् गृणन्ति मुदा।
यातायामपि भुवनात् स्मारं स्मारं यशः सुरभि।।३४।।

यद्यपि वह आज संसार में नहीं है, तथापि उसके सुयश को याद करके लोग भौंरे की भाँति प्रसन्नता से अभी भी उसका गुणगान किया करते हैं।

Though she is no more, the people acting like honey bees, remembering her fragrant glory still refer to her merits.

स्वातन्त्र्यसमररसिकाननुगच्छन्ती गुरुन् महासत्त्वा।
गांधे र्हृदि वात्सल्यं या पुनरुल्लोलमातेने।।३५।।

जो बड़े हौसले वाली होने से (बाल्यकाल में ही) स्वाधीनता–संग्राम के योद्धा अपने बड़ों का अनुसरण करती हुई महात्मा गांधी की लाड़ली बन गई थी।

Who being courageous, even still a kid, putting her feet in the shoes of her elders fighting for India's independence, earned affection from Mahatma Gandhi.

बालापि बाललीलासामान्येनैव घटितबालदला।
स्वाधीनता–रणार्थे यात्मानं शिक्षितं चकमे।।३६।।

बाल्यकाल में ही जिसने बच्चों के खेल के रूप में वानर सेना खड़ी करके स्वाधीनता संग्राम में भाग लेने के लिए प्रशिक्षण लेना चाहा।

Who even teenaged, tried to train herself to participate in freedom fighting by galvanizing a monkey-force of children as a game.

स्थित्वा विदेशभूमौ शान्तिनिकेतन उदारधिषणा च।
पितुरपि पत्रपुटैरथ निपपौ सारस्वतं सुरसम्।।३७।।

उस बुद्धिमती ने कुछ समय विदेश में तथा शान्ति निकेतन में रहकर और बाद में घर पर ही पिता के पत्रों से शिक्षा प्राप्त की।

Who intelligent by nature, had her education abroad for some time and at Shantiniketan and later on at home, through the letters despatched by her father.

याता बहुश्रुतत्वं प्रागल्भ्यं चापि विविधभाषासु।
सावसरं तु न लेभे निजसंस्कृतिसारमाहर्तुम्।।३८।।

यद्यपि उसने इस प्रकार व्यापक ज्ञान अर्जित कर लिया और अनेक भाषाओं में दक्षता भी प्राप्त कर ली तथापि वह अपनी संस्कृति के विषय में अधिक न जान पाई।

She thus had earned wide knowledge and mastery over so many languages but had no chance to know much about her own culture.

तारुण्यमदिरकरणा सहवसतिभवप्रणयहृतहृदया च।
न चिरं फिरोजगांधेर्वामाङ्गं भूषयामास।।३६।।

युवावस्था आने पर आकर्षक व्यक्तित्व वाली होकर उसने (शिक्षा के लिए) एक साथ रहने से उत्पन्न प्रेम के वशीभूत होकर फीरोज़ गांधी से विवाह किया जो कि चिरस्थायी न रह सका।

In young age, having developed a charming personality, she fell in love with Feroze Gandhi for studying together and married him but this knot did not last long.

भुक्त्वा समयोगफलं रूपवयोभूतितुल्यतानुगुणम्।
तनययुगं सुषुवे सा चिह्नं दाम्पत्यसौख्यस्य।।४०।।

कुछ समय तक समान रूप, अवस्था और वैभव के कारण सुखद दाम्पत्य जीवन बिताने के पश्चात् उसने विवाहित जीवन की निशानी के रूप में दो पुत्रों को जन्म दिया।

After having enjoyed her conjugal life which was pleasant from all aspects due to equal match by beauty, age and wealth, she gave birth to two sons as a token of her married life.

राजीवं राजीवं सुगुणामोदावकृष्टजनभृङ्गम्।
धृतराष्ट्रवृत्तसूत्रं सञ्जयमपि सञ्जयं यूनाम्।।४१।।

उनमें एक का नाम राजीव था जिसने अपने गुणों से जनता को उसी प्रकार मोह लिया था जैसे कमल सुगन्ध से भौरों को मोह लेता है। दूसरा पुत्र सञ्जय था जो कि राष्ट्र की बागडोर संभालने वाला युवाओं का नेता था।

The first of them was named as Rajiva as he was popular for his personal virtues, and other was Sanjaya who was supposed to take the reins of nation later and lead the youth.

अचिरानुभूतयोगा दयितेनासौ स्वतन्त्रतासुभटा।
स्मर्तुं क्षणान् सुखांस्तान् कारायां विश्रमं लेभे।।४२।।

स्वाधीनता संग्राम की सैनिक बन जाने से इन्दिरा कुछ ही समय प्रियतम के साथ बिता सकी। मानो, उन सुखद घड़ियों को याद करने के लिये उसने कारावास स्वीकार किया।

यद्यपि वह आज संसार में नहीं है, तथापि उसके सुयश को याद करके लोग भौंरे की भाँति प्रसन्नता से अभी भी उसका गुणगान किया करते हैं।

Though she is no more, the people acting like honey bees, remembering her fragrant glory still refer to her merits.

स्वातन्त्र्यसमररसिकाननुगच्छन्ती गुरून् महासत्त्वा।
गांधे र्हृदि वात्सल्यं या पुनरुल्लोलमातेने।।३५।।

जो बड़े हौसले वाली होने से (बाल्यकाल में ही) स्वाधीनता–संग्राम के योद्धा अपने बड़ों का अनुसरण करती हुई महात्मा गांधी की लाड़ली बन गई थी।

Who being courageous, even still a kid, putting her feet in the shoes of her elders fighting for India's independence, earned affection from Mahatma Gandhi.

बालापि बाललीलासामान्येनैव घटितबालदला।
स्वाधीनता–रणार्थे यात्मानं शिक्षितं चकमे।।३६।।

बाल्यकाल में ही जिसने बच्चों के खेल के रूप में वानर सेना खड़ी करके स्वाधीनता संग्राम में भाग लेने के लिए प्रशिक्षण लेना चाहा।

Who even teenaged, tried to train herself to participate in freedom fighting by galvanizing a monkey-force of children as a game.

स्थित्वा विदेशभूमौ शान्तिनिकेतन उदारधिषणा च।
पितुरपि पत्रपुटैरथ निपपौ सारस्वतं सुरसम्।।३७।।

उस बुद्धिमती ने कुछ समय विदेश में तथा शान्ति निकेतन में रहकर और बाद में घर पर ही पिता के पत्रों से शिक्षा प्राप्त की।

Who intelligent by nature, had her education abroad for some time and at Shantiniketan and later on at home, through the letters despatched by her father.

याता बहुश्रुतत्वं प्रागल्भ्यं चापि विविधभाषासु।
सावसरं तु न लेभे निजसंस्कृतिसारमाहर्तुम्।।३८।।

यद्यपि उसने इस प्रकार व्यापक ज्ञान अर्जित कर लिया और अनेक भाषाओं में दक्षता भी प्राप्त कर ली तथापि वह अपनी संस्कृति के विषय में अधिक न जान पाई।

She thus had earned wide knowledge and mastery over so many languages but had no chance to know much about her own culture.

तारुण्यमदिरकरणा सहवसतिभवप्रणयहृतहृदया च।
न चिरं फिरोजगांधेर्वामाङ्गं भूषयामास।।३६।।

युवावस्था आने पर आकर्षक व्यक्तित्व वाली होकर उसने (शिक्षा के लिए) एक साथ रहने से उत्पन्न प्रेम के वशीभूत होकर फीरोज़ गांधी से विवाह किया जो कि चिरस्थायी न रह सका।

In young age, having developed a charming personality, she fell in love with Feroze Gandhi for studying together and married him but this knot did not last long.

भुक्त्वा समयोगफलं रूपवयोभूतितुल्यतानुगुणम्।
तनययुगं सुषुवे सा चिह्नं दाम्पत्यसौख्यस्य।।४०।।

कुछ समय तक समान रूप, अवस्था और वैभव के कारण सुखद दाम्पत्य जीवन बिताने के पश्चात् उसने विवाहित जीवन की निशानी के रूप में दो पुत्रों को जन्म दिया।

After having enjoyed her conjugal life which was pleasant from all aspects due to equal match by beauty, age and wealth, she gave birth to two sons as a token of her married life.

राजीवं राजीवं सुगुणामोदावकृष्टजनभृङ्गम्।
धृतराष्ट्रवृत्तसूत्रं सञ्जयमपि सञ्जयं यूनाम्।।४१।।

उनमें एक का नाम राजीव था जिसने अपने गुणों से जनता को उसी प्रकार मोह लिया था जैसे कमल सुगन्ध से भौरों को मोह लेता है। दूसरा पुत्र सञ्जय था जो कि राष्ट्र की बागडोर संभालने वाला युवाओं का नेता था।

The first of them was named as Rajiva as he was popular for his personal virtues, and other was Sanjaya who was supposed to take the reins of nation later and lead the youth.

अचिरानुभूतयोगा दयितेनासौ स्वतन्त्रतासुभटा।
स्मर्तुं क्षणान् सुखांस्तान् कारायां विश्रमं लेभे।।४२।।

स्वाधीनता संग्राम की सैनिक बन जाने से इन्दिरा कुछ ही समय प्रियतम के साथ बिता सकी। मानो, उन सुखद घड़ियों को याद करने के लिये उसने कारावास स्वीकार किया।

Having become a freedomfighter, she could enjoy company of her husband merely for a short period and as if in order to remember those pleasant moments, accepted imprisonment.

व्रतिनां विहारयोगःक्व नु भुवि दृष्टश्चिराय धीरहृदाम्।
जनको यथा दयितया, सा दयितेनाभवद् वियुता।।४३।।

सत्त्वशाली और कोई संकल्प लेने वाले लोग भला पृथ्वी पर अधिक दिन सुख कहाँ भोग पाते हैं। जिस प्रकार इन्दिरा के पिता शीघ्र ही प्रिया से बिछुड़ गये थे, उसी प्रकार वह भी अपने पति से बिछुड़ गई।

Courageous people having undertaken austerity can not enjoy long. As she, too, like her father from wife, was separated from her husband.

सवितुश्च देशसेवानिरतस्यासौ सुखादिसंविधये।
साचिव्यमाशु चक्रे करणीये चाापि साहाय्यम्।।४४।।

तदनन्तर अपने पिता को निरन्तर देश सेवा के कार्य में व्यस्त देखकर उन की देखभाल तथा समय स .य पर सहायता करने के लिये वह उनकी निजी सैक्रेटरी बन गई।

Afterwards, she, in order to look after her father who was always busy with service of his motherland, took charge as his private secretary and also proved helpful in discharging his duties.

देशान्तराणि याता सह जनकेनाऽप्यनेकदा किल सा।
राजनयेऽपि सुजटिले शनकैर्गाढां रतिं तेने।।४५।।

वह अनेक बार पिता के साथ विदेशों में भी गई और इस प्रकार कठिन राजनीति के झमेलों में भी गहरी रुचि लेने लगी।

She, accompanying her father on foreign trips, began to take interest in complex politics also.

बहुधा विमर्शकाले परपक्षे मनोऽपि दधती सा।
स्वाभिमते खलु दृष्टे प्रश्नानामन्तमासीदत्।।४६।।

वह अनेक बार समस्याओं पर विचार करते समय दूसरे लोगों की राय पर ध्यान देती हुई भी उसके सम्बन्ध में जिस निर्णय पर पहुँचती, उससे उनका समाधान कर देती थी।

Occasionally during consultation she, despite not ignoring others' opinions, solved the problems with her own decision.

दीपो ज्वलन् समन्तात् प्रचरति तिमिरं प्रसह्य जंघालम्।
तलगं तु बाधते नो शरणागतवत्सलः किन्नु।।४७।।

जलता दीया चारों ओर प्रकाश फैलाता हुआ अंधेरे को दूर भगा देता है पर अपने नीचे के अंधेरे को दूर नहीं करता, क्या वह ऐसा शरण में आये पर कृपालु होने के कारण करता है ?

A burning lamp illuminating the space around, despels away the darkness but does not disturb that lying underneath probably being kind to one seeking refuge.

यदसौ बहु निष्णाता विश्वैतिह्येऽपि विस्तृते गहने।
हन्त! स्वदेशविषये खसूचिभावं किलापेदे।।४८।।

जो कि वह संसार भर के व्यापक व गूढ़ इतिहास का गहरा ज्ञान रखती हुई भी खेद है कि अपने देश के इतिहास के विषय में शून्य ही थी।

Strange enough that she although having profound knowledge about the vast world history, but alas! cut the sorry figure over the history of her own country.

नैतच् चित्रं पश्चिमप्रभुतामायाविलासदुर्ललिते।
मोहान्धतमसमचिरात् प्रसरति चेत् पूर्वदिग्भागे।।४९।।

किन्तु इस में कोई आश्चर्य की बात नहीं कि पश्चिमी देश के अधिकार का जाल बिछा होने के कारण पूर्वी देश में अज्ञान फैल जाता है।

But there is no matter of much surprise if darkness of ignorence spreads in the eastern region under the influence of western occupation.

गुरुजनचरितविभासः प्रतिफलनं सन्तते र्मनोमुकुरे।
प्रभवति यथास्वरूपं प्रतिबन्धो नात्र चेत् कश्चित्।।५०।।

यदि कोई रुकावट न हो तो बड़ों का चरित्र जैसा हो उसका प्रतिबिम्ब सन्तान के हृदय रूपी दर्पण पर अवश्य पड़ता है।

In absence of any obstacle, the image of the character of elders reflects positively in the mirror of mind of their offsprings.

आचाराननुरुन्धे धर्मो न कुलं न जातिमथ शीलम्।
वृत्वापि पारसीकं यन्नार्यपदं जहौ सुमतिः।।५१।।

धर्म आचरण पर आश्रित है वंश, जाति या स्वभाव पर नहीं। यही कारण है कि बुद्धिमती उस इन्दिरा ने एक पारसी को अपना पति चुन कर भी आर्यत्व नहीं त्यागा। (इन्दिरा सदा स्वयं को हिन्दू मानती थी।)

Religion depends upon character, not on a family, caste or nature. This is why that wise lady despite marrying a Parasi youth, did not abandon Hinduism.

जनके दिवं प्रयाते लालबहादुरसुनेतृकं न चिरम्।
प्रविवेश मन्त्रिमण्डलमंगुलिसंस्पर्शनीत्या नु।।५२।।

अपने पिता के दिवंगत हो जाने पर इन्दिरा लाल बहादुर शास्त्री के मन्त्रिमण्डल में उंगली पकड़कर पहुँचा पकड़ने की नीति अपनाती हुई कुछ समय के लिये सम्मिलित हुई।

After death of her father,she awailing the opportunity to come to power, as a first step, joined the ministry formed by Lal Bahadur Shastri for some time.

अचिरेण तत्र विरते शासनवृत्तेस्त्रिणाकपथरत्या।
वर्षे रस–रस–निधि–शशि (१९६६)संख्ये प्राधान्यमगमत् सा।।५३।।

(क्योंकि) कुछ ही समय के पश्चात् लाल बहादुर शास्त्री का स्वर्गवास हो जाने पर वह सन् १९६६ में प्रधानमंत्री बन गई।

(Because) not much later, she, owing to the sudden death of Lal Bahadur Shastri, bacame the Prime Minister of India in 1966 A.D.

पुंवत् प्रगल्भभावा नीतौ सुदृढा प्रशासने निपुणा।
देशं प्रगतिदिगन्तं गमयितुमासीत् समुत्काऽसौ।।५४।।

पुरुषों की तरह निःसंकोच, स्थिर नीति वाली तथा शासन प्रबन्ध में दक्ष होने के कारण प्रधानमंत्री का पद संभालते ही उन्होंने अपने देश को उन्नति के शिखर पर पहुँचाने के लिये यत्न करना आरम्भ कर दिया।

Bold like males, firm on policy and having the skill of governance, she, no sooner, taking charge of premiership, began to take steps to lead the nation towards development and progress.

लब्धायाः समरमहे सैनिकजीवोपहारविभवेन।
वैदेशिककूटनयात् पाकभुवस्तत् पुनर्दानम्।।
जनता अतुदत् सुतरां शस्त्रबले तत्पराश्रयत्वकृतम्।
आत्मालम्बव्रतमिति दृढतां पस्पर्श चित्तेऽस्याः।।५५।।

(पाकिस्तान के साथ हुये) युद्ध में भारतीय सैनिकों द्वारा प्राणों की बाजी लगा कर जीती गई पाकिस्तान की भूमि विदेशी शक्तियों के दबाव में आकर पाकिस्तान को लौटाना जनता को बुरा लगा था, पर यह देश के शस्त्रास्त्रों के लिये विदेशी सहायता पर निर्भर होने के कारण करना पड़ा था। इसलिये इन्दिरा ने शस्त्र–सामग्री के सम्बन्ध में आत्मनिर्भर होने का निश्चय कर लिया।

She had to return Pakistani land won in the battle against Pakistan with the sacrific of Indian forces in large scale, under deplomatic pressure of foreign powers. Though this act was widely disliked by the people, yet she had to do so under duress due to India's dependence on foreign countries for the military materials. Hence, she decided to make her country henceforth selfdependent in this field, too.

अन्यैर्विनाशलीलालास्याय चिरात् सरागमनुयुक्ता।
ऊर्जःसमृद्धिजननेऽणूनां शक्तिः कृता प्रयता।।५६।।

दूसरे राष्ट्र बहुत समय से जिसका उपयोग विनाशकारी अस्त्रों के निर्माण के लिये करते आ रहे थे, इन्दिरा गांधी ने उसी परमाणु शक्ति को देश की आर्थिक प्रगति के लिये बिजली के उत्पादन के कार्य में प्रयुक्त करना आरम्भ कर दिया।

Indira Gandhi, diverted the use of nuclear power so far used by the powerful nations for distructive purposes, for India's economic development through generating energy and power. (She established atomic plants with this purpose.)

तस्या विकटो हासः पुष्करणे वेपथुं हि मत्सरिणाम्।
मनसि च राष्ट्रजनानामाशाप्रमदं समं तेने।।५७।।

उस अणु शक्ति के पोखरन नामक स्थान पर हुये प्रचण्ड अट्टहास (विस्फोट) ने ईर्ष्यालु राष्ट्रों के हृदय में हड़कम्प और भारतीय जनता के हृदय में (अणु शक्ति के क्षेत्र में आत्मनिर्भर होने की) आशा से अपार हर्ष साथ साथ उत्पन्न किये।

The fierce blast of atomic device having taken place at Pokharan, shook the hearts of jealous nations and delighted our nationals simultaneously with the hope of making India self-dependent in this field.

विकटानां टङ्कानां समरप्रगुणान्तरिक्षयानानाम्।
पोतानां रणजयिनां निर्माणे सा गतिं दध्यौ।।५८।।

इसके साथ ही उसने भारी टैंकों, लड़ाकू विमानों तथा युद्ध जीतने वाले जलयानों के निर्माण में तेजी लाने का विचार किया।

Besides this, she also decided to expedite production of heavy tanks, fighter planes warships as well.

कृषकोत्साहविवृद्ध्या यन्त्रोर्वरकादिसाधनैधितया।
भारतवसुधां वसुधां शस्योच्चित्त्या च साऽपश्यत्।।५९।।

उस इन्दिरा गांधी ने ट्रैक्टर आदि मशीनों और रासायनिक खाद आदि की सुविधाओं के द्वारा किसानों को अधिक अन्न के उत्पादन के लिये प्रोत्साहित कर के भारत भूमि को अन्न के भण्डार से समृद्ध कर दिया।

She also succeeded in making India rich with cereals by encouraging the farmer community to grow more food through providing with the agricultural equipments and chemical fertilizers.

उल्लङ्घ्य वियद् बहुधा राष्ट्रैः सख्यं विधित्सती सुदृढम्।
रूसादिविदेशानां प्रणयमरक्षन् निमन्त्र्य च तान्।।६०।।

उसने विश्व के विभिन्न राष्ट्रों के साथ मैत्री सम्बन्ध को और अधिक मजबूत करने की इच्छा से रूस आदि देशों का निमन्त्रण स्वीकार करके तथा वहाँ के नेताओं को भारत आने का निमन्त्रण दे कर अनेक बार हवाई यात्रायें भी की।

Moreover, in order to strengthen ties with friendly nations accepting their invitation she occasionally visited foreign countries like Russia etc. by air and reciprocally invited their leaders to visit India.

लब्ध्वा स्वतन्त्रतामपि विनयोद्योगादिदुर्विधाभिहतान्।
देशान् समुद्धरन्ती शुशुभे द्रविणादिसाहाय्यैः।।६१।।

विश्व के जो देश स्वतन्त्रता पाने पर भी शिक्षा तथा आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुये थे, इन्दिरा गांधी ने धन आदि से उनके पुनर्निर्माण में सहायता भी की।

There were some countries who had recently achieved their independence but were backward in education and economy. Indira became helpful in their

rebuilding by providing with money and academic specialists etc.

लङ्कास्थसाम्यवादिप्रवर्तिते चापि हेतिततिभीतौ।
अन्तःकोपे साऽभूत् प्रशमसहायः सुसख्यजितः।।६२।।

लंका में जब साम्यवादियों ने सशस्त्र विद्रोह छेड़ा तो उस देश के साथ मैत्री का विचार कर के उसने वहाँ शान्ति स्थापना में सहायता भी की।

She being overcome by the friendship with that nation, became helpful in the task of establishing peace in Shri Lanka turmoiled by mutiney started there by the communists.

सिंहलभूमिप्रोषिततमिलसमस्यासमाधिसक्तमनाः।
स्वयमपि गमनायासं नागणयद् व्यापृताऽपि सती।।६३।।

यद्यपि वह अपने देश की समस्याओं के समाधान में व्यस्त थी तो भी भारत से सिंहल द्वीप में जा कर बसे तमिलजनों की समस्या को सुलझाने के लिये स्वयं वहाँ गई।

Though pre-occupied by various problems at home, she in order to solve the problems of Tamils migrated to Ceylone, went herself there.

लोकैश्च पूर्ववङ्गे पाकस्थानीयशासनोन्मथितैः।
स्वातन्त्र्यरणे विहिते साऽभून्मनसाऽपि सधुराऽत्र।।६४।।

पूर्वी बंगाल में (जो उस समय पाकिस्तान का भाग था) पाकिस्तानी सरकार द्वारा सतायी गई जनता द्वारा छेड़ी गई आजादी की लड़ाई में इन्दिरा ने सच्चे दिल से भाग लिया।

She also provided with the whole-hearted support to the people of Eastern Bengal in their fight for their freedom from their cruel Pakistani rulers ceaselessly torturing them.

सबलेऽप्यत्याचरितं तुदति समनसां मनांसि सुजनानाम्।
क्रौर्यं निबलेषु तदा मनुजः सन् कथमुपेक्षेत।।६५।।

यदि बलवान पर भी कोई अत्याचार करे तो भले लोगों को इस से दुःख होता है। तब भला दुर्बल के साथ किये निष्ठुर व्यवहार की मनुष्य होता हुआ कोई कैसे अनदेखी कर सकता है ?

It pains a gentle man if one tortures even a mighty. Then how a human being can ignore cruelty shown to a feeble ?

स्वातंत्र्यं वङ्गजनै र्भङ्गो देशस्य याहिया–सचिवैः।
बन्दित्वं पाकभटै र्लेभे कीर्तिस्तथेन्दिरया।।६६।।

(उस युद्ध के फलस्वरूप) पूर्वी बंगाल की जनता को स्वतंत्रता, याहिया खाँ (तत्कालीन पाकिस्तानी डिक्टेटर) के मन्त्रियों को देश भंग, पाकिस्तानी सैनिकों को कारावास और इन्दिरा गांधी को श्रेय प्राप्त हुआ।

As a result of that battle, the people of east Bengal achieved their independence from Pakistan, ministers of Yahiya Khan had to suffer with loss of a part of their country, surrendering Pakistani forces got imprisonment and credit for all that went to Indira Gandhi.

मानुष्यके शतायुषि दीर्घायुषि चापि वैभविनि भुवने।
अल्पायुषोऽत्र देशे लोकाः किं चिन्त्यमेतत्तु।।६७।।

यह सोचने की बात है कि जब मनुष्य मात्र का आयुष्यकाल सौ वर्ष का माना गया है तथा भारत से बाहर की दुनिया के लोग ऐश्वर्य सम्पन्न होने के कारण लम्बी आयु तक जीते हैं, यहीं के लोग थोड़ा समय क्यों जीवित रहते हैं।

It is a cause of worry that when the full span of human life is hundred years and the people of other rich countries live longer, why the Indians are shortliving.

दारिद्र्यमेव दोषो निदानमत्र प्रभावुको रोगः।
यक्ष्मेव रुजो विविधा आत्मनि योऽन्तर्दधाति किल।।६८।।

इस का कारण निश्चय ही गरीबी की प्रबल बीमारी है जो कि क्षय की भाँति अपने भीतर बहुत सी बुराइयां समेटे हुये है।

The main cause of it definitely is the desease of poverty which like phthisis is the root cause of so many ills.

आन्तरिकोऽयं शत्रुः स्वातन्त्र्येऽप्यधिगतेऽक्षतो यावत्।
अर्थेन पारवश्यं तावन्नः संस्थितं लोके।।६९।।

स्वतंत्रता पा लेने के बाद भी जब तक हमारा यह भीतरी दुश्मन बना रहेगा, तब तक संसार में हमारी आर्थिक पराधीनता बनी ही रहेगी।

Though we are now politically free, as long this internal enemy is not eliminated, we shall always economically depend on others.

इत्युद्दिश्य तदीयो लोपो घोषेऽप्यलब्ध महिमानम्।
स्त्री–बालचिकित्साभिर्नियतं शमनप्रभुत्वञ्च।।७०।।

ऐसा लक्ष्य बना कर 'गरीबी हटाओ' का नारा लगाया गया, तथा स्त्रियों व बच्चों के ठीक इलाज की व्यवस्था करके इनकी मृत्यु पर भी नियन्त्रण किया गया।

With this aim the slogan of 'remove poverty' was raised and mortality rate among women and children was controlled through improvement in medical services.

अन्धङ्करणस्तिमिरः प्रभुताभिजनप्रवृद्धविभवोत्थः।
विकरोति जनं सद्यः स्वरतिं किं वाऽन्यथादृष्टिम्।।७१।।

अधिकार, उच्चकुलीनता तथा धन की अधिकता से उत्पन्न अहंकार रूपी अन्धकार जो कि मनुष्य को अन्धा बनाने वाला है, शीघ्र ही लोगों का मन ऐसा बिगाड़ देता है कि या तो वह स्वार्थी बन जाता है या उल्टे काम करने लगता है।

Pride created by power, birth in an aristocratic family and enormous wealth is such a darkness which blinds the mankind to such an extant that either that becomes selfish or thinks otherwise.

निर्मलगगनतलस्थो जनयति न रविर्दिवा तथोष्माणम्।
मलिनपयोधरवृन्दैर्वृतो यथा प्रावृषः काले।।७२।।

स्वच्छ आकाश में उगा सूर्य दिन में उतनी गर्मी नही दिखाता जितनी कि वर्षा ऋतु में काले बादलों से घिर कर दिखाया करता है।

The sun rising in the clear sky does not create so much heat even in day time as much being encircled by dark clouds in rainy season.

सुजनसचिवकुलनिघ्नः किंप्रभुरपि नो दुनोति जनचेतः।
कुत्सितमन्त्रिसहायः सत्प्रभुरपि कुत्स्यते लोकैः।।७३।।

शासक बुरा भी क्यों न हो, यदि वह भले मन्त्रियों के कहे के अनुसार चलता है तो वह प्रजा को कष्ट नहीं देता, परन्तु स्वभाव से अच्छा होता हुआ भी दुष्ट मन्त्रियों पर निर्भर रहने वाला हो तो निन्दनीय बन जाता है।

Even a bad ruler depending upon good secretaries is not so troublesome to the people but a goodly one having dishonest ministers is always cursed.

आसीद् विडम्बनेयं स्वार्थप्रवणा मलीमसाः षिड्गाः।
प्रियदर्शिनीमपीमां केऽप्यप्रियदर्शिनीं चक्रुः।।७४।।

यह दुर्भाग्य की ही बात थी कि कुछ स्वार्थी धूर्तों ने (जो सदा इन्दिरा गांधी को घेरे रहते थे) उसे जो सही विचार रखती थी, विपरीत विचार वाली बना दिया।

Unfortunately a coterie of some selfish partymen turned right thinking Indira otherwise.

'त्वं लक्ष्मीस्त्वं दुर्गा भारतभूस्त्वं सरस्वती साक्षात्'।
चाटुप्रवणैरित्थं क्षिप्ता सा मदमये तिमिरे।।७५।।

उन चापलूसों ने 'तुम तो साक्षात् लक्ष्मी या भवानी हो, जीती जागती भारत माता हो, तुम्हीं सरस्वती हो'। इस प्रकार की चापलूसी से उसे अभिमानिनी बना दिया।

Those flatterers falsely praising her with the words like 'Thou art Goddess Lakshmi, Bhawani, Indira is India , Saraswati embodied.' made her haughty and arrogant.

जीवन्त्यपि देवत्वं गमिता तैः कारिता विवादमयान्।
दुर्निर्णयान् यशोऽस्या यैः क्षिप्तं संशये गहने।।७६।।

उसे जीती जागती देवी बना कर उन लोगों ने उससे वे काम करा दिये जो सब को पसन्द नहीं थे। इससे वह बदनाम हो गई।

They elevating her to the position of living goddess with such flattery, made her to take unjust decisions not beyond dispute and brought ignominy to her.

अविनाभावं नीता भारतभूम्याऽपरैश्च पादलिहैः।
सङ्कोच्य देशसीमां स्वदलावधितां तु सा निन्ये।।७७।।

दूसरे चाटुकारों ने 'इन्दिरा ही भारत है' यह कह कर जो उसकी प्रशंसा की, उससे फूल कर उसने देश को पार्टी में सीमित कर दिया।

Other foot lickers identifying her with India through the slogan like ' Indira is India and India is Indira' made her to bring the country to the party limit.

राज्ञां विश्रमवृत्तिर्विनिश्चिता या प्रवेशसन्धिमयी।
भारतसंघे, नीताऽस्तं सा विस्रम्भवार्ता च।।७८।।

रियासतों के भारत संघ में प्रवेश के समय राजाओं को पेन्शन देने का जो निर्णय लिया गया था, इन्दिरा गांधी ने उसे समाप्त करने के साथ सरकार की विश्वसनीयता भी मिटा दी।

She abolished the system of allowing pensions to the ex-rulers of princely states of India promised at the time of their accession with Indian republic and this decision brought credibility of the government to an end.

एकनवतिसाहस्री बन्दीकृतपाकसैनिकानां सा।
शिमलासन्धिविमुक्ता भारतसैन्यामदायासीत्।।७९।।

(बंगला देश के निर्माण के लिये हुये युद्ध में) बन्दी बनाये गये पाकिस्तान के ९१ हजार सैनिकों को शिमला सन्धि के अनुसार मुक्त करना भारतीय सैनिकों के लिये खेदजनक सिद्ध हुआ।

(And) release of 91 thousand Pakistani army men captivated at the end of the battle for creation of Bangladesha, under the Shimla pact proved irksome to the Indian forces.

जनराशिवृद्धिमतुलाम् अभावहननप्रयत्नफलहर्त्रीम्।
उपरोद्धुमना लोकप्रीतिं स्वस्मिन् न्यरुन्ध च सा।।८०।।

इसके अतिरिक्त नित्य उपयोग की वस्तुओं का अभाव दूर करने के लिये किये गये प्रयासों को निष्फल करती दिन पर दिन होनेवाली जनसंख्या वृद्धि को रोकने के लिये नसबन्दी आदि कठोर कदम उठाने के कारण जनता में उसकी लोकप्रियता घट गई।

More over, she lost her popularity among the people for taking stern measures for controlling alarming birthrate responsible for the failure of all steps taken to remove shortage of the material of daily use.

अवशानां चाटुपरैरधिकृद्भिर्लोभभीतिविवशैर्हि।
स्नावच्छेदेन बलादाशाबन्धोऽपि विच्छिन्नः।।८१।।

खुशामदी व प्रोत्साहन के लिये मिलने वाले धन के लालच या नसबन्दी न कर पाने से संभावित दण्ड से भयभीत सरकारी कर्मचारियों ने बहुत से लोगों की जबरदस्ती नसबन्दी करके उनकी भविष्य में सन्तान पाने की आशा पर भी पानी फेर दिया।

She was also made unpopular with the common people by some government officials who in order to gain her favour or greedy of handsome reward promised for carryng on the birth control measures in large scale, forcibly sterilized poor people dashing their hope for an issue forever.

दारिद्र्यलोपहेतो र्जनतायाः सूत्रविंशतिं प्रथिताम्।
तनयस्य पञ्चसूत्री निनाय शासनमथाप्यन्तम्।।८२।।

उसके (कनिष्ठ) पुत्र संजय के पञ्चसूत्री कार्यक्रम ने गरीबी उन्मूलन के लिये इन्दिरा द्वारा चलाये गये बीस सूत्री कार्यक्रम के साथ उसका शासन भी समाप्त कर दिया।

Five point programme for the end of poverty launched by her younger son Sanjaya invited the simultaneous end of both twenty pointed programme envisaged by Indira and her rule.

सजवाहरेण पूर्वं न्यपाति यो वल्लभेन सन्मत्या।
तारासिंहस्य मनोरथ उद्गूर्णः स इन्दिरया।।८३।।

मास्टर तारा सिंह की (पृथक् सिख राज्य बनाने) की जिस इच्छा पर जवाहर लाल नेहरू और सरदार वल्लभ भाई पटेल ने पानी फेर दिया था उसे इन्दिरा गांधी ने फिर से उभार दिया।

She also revived the demand of Master Tara Singh (for creation of a separate Sikh state) which had been rejected by Jawahar Lal Nehru and Sardar Ballabh Bhai Patel, by accepting a Punjabi speaking state.

भाषाधारच्छद्मा पञ्चापे शिष्यतन्त्रसंघर्षः।
प्रान्तद्वैधीभावे तस्या विपदो न्यधान् मूलम्।।८४।।

(पंजाबी) भाषा भाषी राज्य निर्माण के बहाने पृथक् राज्य की मांग को लेकर पंजाब में सिख समुदाय द्वारा चलाये गये आन्दोलन ने पंजाब के पंजाब व हरियाणा इन दो राज्यों में विभाजन से इन्दिरा के लिये विपत्ति खड़ी कर दी।

Division of Punjab state in two different states viz. Punjab & Haryana due to the movement started by the sikhs in Punjab with the demand for creation of a separate Punjabi speaking state, also became a root cause of her sad demise.

गिरिपक्षपातनिघ्ना निजदलभङ्गेऽपि लक्षितेऽविचला।
द्रढिमानमसौ मनसो नेतृत्वञ्चाञ्जयत् स्वस्य।।८५।।

राष्ट्रपति के चुनाव में वेङ्कट वराह गिरि का साथ देते हुये उसने कांग्रेस पार्टी के टूटने का डर होने पर भी अपने निश्चय पर अडिग रह कर मन की दृढ़ता और पार्टी पर अपने प्रभाव को सूचित कर दिया।

In the election (of President of Indian republic) she, siding with varah Venkat Giri, suggested her firmness of mind and hold on the party by not budging from her stand despite imminent possibility of split in the party.

नागरवालाकाण्डे वित्तेऽपहृते च लक्षषष्टिमिते।
इन्दिरया हृतमयशो, दैवे विमुखे न किं विमुखम्।।८६।।

नागरवाला वाली घटना में किसी के द्वारा बैंक से साठ लाख रुपया निकाले जाने पर उस के लिये इन्दिरा बदनाम हुई। सच ही कहा है कि भाग्य के रूठ जाने पर कौन विरोधी नहीं बन जाता।

In the Nagarwala episode, rupees sixty lacs were withdrawn by some one but Indira earned ignominy for that. It is true that everyone goes against when ill luck prevails.

प्रतिपक्षदलनपरुषा कालीव करालचण्डमुण्डधरा।
आपातस्थितिमशिवां न्यमन्त्रयच्चात्मनः पातम्।।८७।।

अपने विरोधियों को कुचल डालने के लिये चण्ड और मुण्ड राक्षसों के सिर धारण करने वाली काली के समान क्रूर बन कर उसने देश में आपात स्थिति लागू करके अपने शासन से च्युत होने का कारण उपस्थित कर दिया।

In order to crush her opponents showing cruelty to them, Indira resembling formidable Goddess Kali, invited her fall from power by proclaiming inauspicious emergency across the country.

शासनभयं विलङ्घ्यं दुर्लङ्घ्यं चापि मृत्युरोगभयम्।
लङ्घ्यो न तु जनकोपो न कोऽपि यस्याप्रसह्यः स्यात्।।८८।।

शासन से होने वाले खतरे का सामना किया जा सकता है। किसी बीमारी या मृत्यु के संकट को कुछ कठिनाई से टाला जा सकता है। परन्तु जनता के विरुद्ध हो जाने पर उसका सामना करना संभव नहीं।

One can easily face the danger arising from rule, fear from a disease or even

death can also be faced though with some difficulty, but if the people uprise against, nobody can face them.

निर्वाचने जनानामभिमतमात्मनि परीक्षितुं विहिते।
सदला विजयं तेभ्यो विष्वक् चक्रे सुखोपनतम्।।८६।।

जनता का अपने विषय में मत जानने के लिये जब उसने चुनाव कराये तो अपनी पार्टी के साथ आसानी से बहुमत प्राप्त कर लिया।

She easily collected majority votes in her favour including the party in the election arranged in order to know the public opinion in favour or against.

न्यायालयः प्रयागे दण्डममुष्यां न्यपातयत् कठिनम्।
निर्वाचनेष्वनर्हां कुर्वंस्तामर्थिभावाय।।६०।।

किन्तु इलाहाबाद हाईकोर्ट ने इन्दिरा गांधी को (चुनाव में अनियमितता बरतने के लिये) 6 वर्ष के लिये चुनाव में खड़ी होने के अयोग्य होने का कठोर दण्ड दे दिया।

But the high court at Allahabad sentenced Indira regorously by disqualifying her for candidature in any election for 6 years for using unfair means during election.

कालेऽत्राननुकूले बन्धुजनोऽपि प्रयाति वैमुख्यम्।
पितृस्वसाऽपि यत्सा प्रतिपक्षेऽस्याः स्थिता रुष्टा।।६१।।

जब किसी का समय बुरा जा रहा हो तो सगे भी विरोधी बन जाते हैं। क्यों कि उस समय स्वयं बुआ (विजयलक्ष्मी पण्डित) भी रूठ कर इन्दिरा के विरुद्ध हो गई थी।

When the evil stars prevail even kith and kins go agaisnt one; as at that time, even her aunte (Vijaya Lakshmi) opposed her.

क्षणनिग्रहश्च तस्या जनताशासनसुदुर्नयाकलितः।
तस्यां शिवां जनानां तत्र च विषमां मतिं तेने।।६२।।

उस समय जनता दल सरकार की अकुशल नीति से वह कुछ समय के लिये बन्दी बनाई गई पर इससे जनता इन्दिरा के पक्ष में और सरकार के विरुद्ध हो गई थी।

Her imprisonment for a short period caused by the inapt policy of then Janata Party Government brought the people in her favour and embarrassed the rule.

तनये विमानभङ्गेऽस्तमितेऽपि न हन्त! मानभङ्गमिता।
सत्त्वप्रकर्षमसमं सा व्यानग् धीरतां चापि।।६३।।

(अपने कनिष्ठ) पुत्र संजय के विमान दुर्घटना में दिवंगत हो जाने पर भी अकड़ न छोड़ कर उसने अपने अतुल साहस और धैर्य का परिचय दिया।

Inspite of death of her younger son Sanjaya in a plane crash, not yeilding she displayed her high spirit and patience of mind.

सार्धद्वयमब्दानां शासनतः प्रोषितेन्दिरापि सती।
चक्रे प्रभाववृद्धिं रङ्गे भूयः समापतितुम्।।६४।।

ढाई वर्ष तक अधिकार से वञ्चित रहने पर भी फिर से शासन में आने के उद्देश्य से इन्दिरा ने जनता पर अपना प्रभाव बढ़ा दिया।

Indira, though being out of power for half and two years, enhanced her influence among the people to stage her re-entry in the government.

सुन्दोपसुन्दकुगतिं जनतादलशासने ततो याते।
सुरतेव देवलोके लेभे तन्त्रे प्रतिष्ठां सा।।६५।।

तदनन्तर जनता दल की सरकार सुन्द व उपसुन्द[1] की भाँति (घटक दलों के) अन्तर्विरोध से गिर गई तो वह स्वर्ग में देवताओं की भाँति फिर से अधिकार में आ गई।

As after the collepse of Janata party government like the demon brothers Sunda and Upasunda for their internal conflict, she like gods in heaven, came again to power.

---

1. सुन्द और उपसुन्द दो असुर भाई थे जिन्हें ब्रह्मा का वरदान था कि वे केवल आपस में लड़कर एक दूसरे के हाथ से मरेंगे। देवताओं को हरा देने पर उन्हें मारने के लिये ब्रह्मा ने तिलोत्तमा नाम की एक सर्वाङ्ग सुन्दरी अप्सरा का निर्माण किया जिसे पाने के लिये दोनो भाई आपस में लड़कर मर गये।

अनुभूय कलाहानिं कञ्चित् कालं तु सेन्दुलेखेव।
अधिगत्य पूर्णमण्डलमुदिता बहुमता शुशुभे।।६६।।

जिस प्रकार चन्द्रमा की रेखा (कृष्ण पक्ष में) कुछ दिनों के लिये कलायें खो कर (पुनः शुक्ल पक्ष में) बढ़ कर (पूर्णिमा के दिन) पूरा मण्डल पाकर जनता से पूजी जाती हुई शोभित होती है, इसी प्रकार इन्दिरा भी कुछ समय के लिये शासनच्युत होकर प्रभावहीन रही पर निर्वाचन में विजय होने पर बहुमत पाकर पूरे दल के साथ अधिकार में आकर शोभित हुई।

As the diameter of the moon becomes small in the dark half of a month but in the bright half the diameter of its disc becomes full, likewise, Indira having experienced humiliation for some time due to being out of power, retained her majority for having maximum votes.

विजयेन लब्धमाना समरे निर्वाचनेऽथ सानुगता।
अधितस्थौ युगपत्सा शासनतन्त्रं दलं च निजम्।।६७।।

लोकसभा के चुनाव रूपी संग्राम में अपने दल के अन्य प्रतिनिधियों के साथ जीतकर नेता के रूप में प्रतिष्ठित होकर वह एक साथ सरकार व अपने दल की अध्यक्ष बनी। (प्रधानमन्त्री व इन्दिरा कांग्रेस की अध्यक्ष बन गई)

having come with flying colours alongwith her partymen in the battle of parliamentary elections, she simultaneously re-assumed headship of the government as well as of her party.

सूत्रे गृहीतमात्रे कालमिवाल्पं विलोक्य पुरतोऽसौ।
देशेन सह त्वरया प्रगतिदिशं प्रत्यभिससर्प।।६८।।

शासन भार हाथ में लेते ही वह मानो अपने आगे कुछ कर दिखाने के लिये थोड़ा ही समय देखती हुई तीव्र गति से देश की उन्नति में प्रवृत्त हुई।

No sooner, she having come to power, as if noticing little time (to do some thing) expedited process of progress of the nation.

ऊर्जासलिलोर्वरकैर्ऋणसौविध्यैः कृषाणशर्मकरी।
धान्येन विदेशानामपि सुखदं भारतं चक्रे।।६९।

उसने विद्युत, सिंचाई के लिये पानी और खाद सुलभ कराने तथा ऋण की सुविधा देकर किसानों को लाभ पहुँचाते हुये (अन्न का उत्पादन बढ़ा कर) भारत को अन्न के भण्डार

से विदेशों की सहायता करने में समर्थ बना दिया।

She helping farmers with sufficient and timely supply of power & water (for irrigation), fertilizer and with the provision of loans on easy terms, made India rich with food and capable of helping other countries with surplus cereals.

नवनवरणोपकरणक्रयनिर्माणप्रशिक्षणैरनिशम्।
शान्तिसुरक्षाहेतोः सैन्यानि कृतान्यजेयानि।।१००।।

इन्दिरा गांधी ने (राष्ट्र में उपद्रवों को) शान्त करने और उसकी रक्षा के लिये न्यूनतम युद्ध सामग्री की खरीद, अपने ही देश में उनके उत्पादन तथा उनके प्रयोग की ट्रेनिंग देकर देश की सेनाओं को किसी से परास्त न होने वाली बना दिया।

She took constant steps to make India's forces invincible through purchase of the latest weapons, enhancement in their manufacturing and proper training in their handling.

खर्वातिरिक्तमुद्राविनिमयलभ्यस्य खनिजतैलस्य।
उत्पादो बहुगुणतां लघुतां च पराश्रयो गमितः।।१०१।।

खरब से भी अधिक रुपयों से जिसका आयात करना पड़ता था, इन्दिरा गांधी ने उस पेट्रोलियम का उत्पादन कई गुना बढ़ा कर उसकी आयात पर निर्भरता काफी घटा दी।

She also decreased dependence on import of petroleum costing billions of currency through manifold enhancement in their production.

हित्वा विलासलीलां देशविभूत्यै निमज्ज्य वारिनिधौ।
भूगर्भतैलहेतोः सागरसम्राट् परिभ्रान्तः।।१०२।।

विलासिता को त्याग कर सागर सम्राट (नामक पृथ्वी में छेद करने वाला यन्त्र) भारत देश की समृद्धि के लिये समुद्र में डुबकी लगा कर घूमने लगा (तेल के लिये पृथ्वी को खोदने लगा)।

Leaving aside the amorous life (for which emperors were blamed) the boring machine named as Sagara Samrat (Emperor of Sea) merged into the ocean for the sake of petroleum and began to revolve there.

नित्योद्गतधूमशिखामलिनितमत्सरिमनांसि च महान्ति।
तां ख्यापयन्ति सततं खनितैलोत्पूतिभवनानि।।१०३।।

दिन रात उगले धुएँ से (भारत की औद्योगिक प्रगति को देख कर) जलने वाले देशों के मन को और मैला करते बड़े बड़े तेल शोधक कारखाने सदा इन्दरा की ख्याति बढ़ाया करते हैं।

Enormous refineries blackening more the hearts of jealous nations with the smoke emitted by them day & night still make Indira glorious.

नानासन्धिविधानैर्गतागतैर्भावविनिमयैश्चापि।
वाणिज्यं नाट्यमिवेन्दिरया चक्रे प्रहर्षाय।।१०४।।

इन्दिरा गांधी ने अनेक व्यापारिक समझौते करके, दूसरे देशों की यात्रा तथा उन नेताओं के यहाँ आगमन से और वार्तालाप द्वारा विचारों के आदान प्रदान से (देश के) व्यापार को उसी प्रकार सुखदायक बना दिया जैसे कोई नाटककार मुख आदि सन्धियों की योजना, आंगिक अभिनय, संवाद तथा प्रेम आदि भावों के विनिमय से नाटक को रोचक बना देता है।

She made India's commerce interesting through various pacts, paying visits to other countries and inviting their industrialists to India, and negotiations in the same way as a playwright makes his drama more pleasant through proper use of joints of plots, movements of characters to and fro and dialogues.

वैदेशिकमुद्राणामपि निचयैः सम्भृतोऽथ सौवर्णः।
कोशो राष्ट्रस्य तया नीतो मेदस्वितां भूयः।।१०५।।

इन्दिरा गांधी ने विदेशी मुद्राओं की वृद्धि से भारत का स्वर्णकोष और भी समृद्ध कर दिया।

Indira also enriched India's treasure with the gold reserves and foreign currencies.

क्रीडाधिमानहेतोः पश्चिमराष्ट्रप्रयोजिताऽपि तुला।
आयोजि तया देशे प्राच्यानामेशियादवपुः।।१०६।।

इन्दिरा गांधी ने खेलों के क्षेत्रों में भी भारत का मान बढ़ाने के निमित्त अब तक पाश्चात्य राष्ट्रों द्वारा आयोजित की जाने वाली खेलों की प्रतियोगिता (एशिया के देशों की प्रतियोगिता होने के कारण) एशियाद नाम से भारत में भी आयोजित की।

In order to enhance India's prestige in the field of games, Indira also arranged international tournaments known as Asiad which were arranged in the past by the Western nations.

मदगूनां सन्तत्या वृद्ध्याऽतुलया च समरयानानाम्।
चक्रे वारिधितलमपि न स्पृश्यं वैरिवीरदृशाम्।।१०७।।

उसने पनडुब्बियों तथा युद्धपोतों की संख्या प्रचुर मात्रा में बढ़ा कर भारतीय समुद्र को भी शत्रु सैनिकों की पहुँच से बाहर कर दिया।

She also made Indian ocean inaccessible to the enemy-soldiers through manifold increase in the number of submarrines and warships.

प्रालेयकुहालीने चान्धार्णवसंज्ञिते महीभागे।
भारतकेतुनिवेशे सा सत्त्वोत्कर्षमातेने।।१०८।।

बर्फ के श्वेत अन्धकार से ढके अन्ध महासागर के क्षेत्र में उसने भारत की ध्वजा फहराने का असाधारण हौसला दिखाया।

She also displayed her high ambition and courage by encouraging India's navy to hoist India's flag in highly snow-covered area of Arctic Sea.

शस्त्रास्त्रविनिर्माणेऽप्यवहीनं भारतं सदुत्साहा।
प्रियदर्शिनी दिदृक्षुः साऽऽसीन् निर्यापकं तेषाम्।।१०९।।

जो भारत सभी प्रकार के हथियारों के निर्माण में पिछड़ा हुआ था, प्रियदर्शिनी इन्दिरा ने बड़े उत्साह के साथ लक्ष्य बनाया कि वह उनका निर्माण करता हुआ अपनी आवश्यकता पूर्ति के साथ साथ विदेशों को भी उनका निर्यात कर सके।

That Priyadarshini being highly courageous, wanted to see India capable of exporting weapons of all types after meeting with her requirement, though she was still lagging behind in this field.

नृणां व्योमविहारे वियद्–रहस्यानुसंहितौ च रुचिम्।
आर्यभटेनासौ व्यानक् किं भारतीयानाम्।।११०।।

क्या उसने आर्यभट उपग्रह को छोड़कर भारतवासियों की आकाश यात्रा तथा अन्तरिक्ष सम्बन्धी अनुसन्धान में दिलचस्पी प्रकट की थी ?

Did she exhibit interest of Indian people in space-travel and astronomical researches through launching the satellite known as Aryabhata?

रूसापसर्पसुदृशो विज्ञानविदो विधाय सा प्रयतान्।
गगनारोहणकर्मणि रोहिण्याश्चातनोत् कुतुकम्।।१११।।

उस इन्दिरा ने रूस की जासूस सुन्दरियों तथा वैज्ञानिकों को नियत कर के रोहिणी नामक अन्तरिक्ष यान को अन्तरिक्ष में भेजा।

She also made the satellite Rohini sent into space by appointing scientists and Russian lady detectives as observers.

लोकान्तरयात्रायामवहीनं भारतं किमुपनेतुम्।
साभिननन्द वियत्स्थं सुचिरं राकेशशर्माणम्।।११२।।

उस इन्दिरा ने मानो ग्रहयात्रा में पिछड़ रहे भारत को (इस क्षेत्र में) दीक्षित करने के लिये ही क्या अन्तरिक्ष में विद्यमान राकेश शर्मा का अभिनन्दन करते हुये देर तक उससे बातचीत की थी।

She as if in order to train India lagging behind in the journey to other planets (sent Rakesh Sharma to space) and congratulated him for his success in this task by talking with him long.

जनकप्रवर्तितं तं ताटस्थ्यपथं च सेन्दिराऽपि सती।
संहारं कलहानामपप्रथल् लोकशर्मधिया।।११३।।

इन्दिरा होते हुये भी उसने संसार की सुख शान्ति के लिये पिता द्वारा चलाई तटस्थता नीति को युद्धों का अन्त करने के साधन के रूप में प्रचारित किया।

In spite of being Indira herself, she with the aim of safty of this globe, continued to follow the policy of non-alignment sponsored by her father which could check the wars in future.

---

1. यहाँ गूढ़ आशय यह है कि जब कि रोहिणी नक्षत्र आकाश में पहले ही है, इन्दिरा ने विशेष प्रयोजन से दूसरी मनुष्य निर्मित रोहिणी भिजवाई।

2. इन्दिरा लक्ष्मी का भी नाम है जो चिर काल से झगड़े की जड़ मानी गई है। वह युद्धों का अन्त चाहे, यह विस्मय की बात है, यह गूढ़ आशय है।

गन्त्रीव पुरस्थासौ नीतिं ताटस्थ्यवर्तिनीं जगति।
आन्दोलनतां निन्ये राष्ट्राण्यामन्त्र्य निजदेशे।।११४।।

उसने इंजन की भांति सब से आगे रह कर विभिन्न राष्ट्रों के नेताओं को अपने दश में निमन्त्रित करते हुये विचार विमर्श के द्वारा तटस्थता की नीति को एक आन्दोलन का रूप दे दिया।

Standing at the forefront like an engine, she, inviting the leaders of other nations, for negotiations, gave new shape of a movement to the policy of non-alignment.

अग्निःस्फुलिङ्गमात्रस्तृणसङ्क्रान्तोऽपि भस्मसात् कुरुते।
सदनानि विप्रकृष्टाण्यपि किंन्वेतत् स्मृतं जातु?।।११५।।

क्या आप लोगों ने कभी इस पर भी विचार किया कि आग की एक चिनगारी भी यदि तिनकों में फैल जाये तो दूर–दूर के घरों को भी राख कर डालती है।

Do you ever think over that even a single sparkling of fire transferred to a heap of straw, turns distant houses too to an ash.

क्रीडन्नग्निशिखाभिः स्वयमपि तासां व्रजेत् स गोचरताम्।
अलमिति परनाशार्थं तं प्रज्वाल्य स्व–शक्तिमदात्।।११६।।

आग की लपट से खेलने वाला मनुष्य स्वयं भी उसका शिकार बन जाता है। इसलिये (धन व शस्त्रास्त्रों) की ताकत के अभिमान में चूर होकर युद्ध की आग भड़काना बन्द कर दीजिये।

One playing with the flames of fire, can oneself, too, fall prey of them. Hence, please, refrain yourself from kindling fire (in the form of starting war) out of pride, for others' destruction.

इति मन्त्रमदाच् शान्ते र्भूयो भूयो मदेद्धराष्ट्रेभ्यः।
कालमकालेऽपि भुवः साग्रहमामन्त्रयद्भ्यः सा।।११७।।

वह धन व शस्त्रास्त्रों की शक्ति के अहङ्कार में चूर तथा भंयकर युद्ध छेड़ कर असमय ही प्रलय लाना चाहते बड़े राष्ट्रों को बार–बार इस प्रकार शान्ति का परामर्श दिया करती थी।

She advised again and again other mighty nations bent upon inviting doom's day prior its due time out of pride for their wealth and military power, through preaching such sermons to them.

कतिपयनेतृसुमत्या प्रस्तुतमात्रा तटस्थतानीतिः।
सार्धशतकल्पराष्ट्रप्रियतां नीता तया नेत्र्या।।११८।।

आरम्भ में कुछ ही नेताओं की सूझबूझ से सुझाई गई उस तटस्थता की नीति को उस इन्दिरा ने लगभग डेढ़ सौ राष्ट्रों से स्वीकृत करा दिया।

The policy of non-alignment proposed by a few' good thinking leaders in the beginning was made acceptable to nearly one and a half hundred nations by constant efforts of that leading lady.

पूर्वं विकसितदलिताभिधया वर्गौ मतौ च राष्ट्राणाम्।
अपरोऽपि तया विहितः प्रयतानां निजविकासाय।।११९।।

पहले संसार में राष्ट्रों के विकसित और अविकसित ये दो ही वर्ग थे, परन्तु इन्दिरा ने प्रगति के लिए प्रयत्नशील राष्ट्रों का विकासशील यह एक तीसरा संघ भी बना दिया।

In the past, nations in the world were divided into two groups viz. developed and under developed ones. But she formed a third group of developing countries, too.

दारिद्र्यस्य विलोपो लक्ष्यं नीतेर्विघोषितं बहुधा।
पर्वतखननेऽपि कृते मूषकलब्धिः परं जाता।।१२०।।

यद्यपि इन्दिरा के समय में कई बार गरीबी का उन्मूलन शासन की नीति के रूप में घोषित किया गया, पर खोदा पहाड़ निकली चुहिया की कहावत चरितार्थ हुई।

Although removal of poverty (from India) had so many times proclaimed as the chief goal of the Government but it proved a case of far cry little wool.

अन्त्योदय ऋणदाने पशुपालनवाटिकादियुक्तिकृते।
पक्वेष्टकागृहाणां निर्माणे चातनोत् सुमतिम्।।१२१।।

उसने अन्त्योदय योजना के अनुसार उन्हें रोजगार के लिए पशुपालन व बाग–बगीचे लगाने के लिए ऋण देने व पक्के घर बनाने का भी विचार किया।

She thought of upliftment of the down-trodden by providing loan for undertaking husbandary, horticulture, and brick-houses to them.

अल्पायाऽऽक्रमिता वा भूमिः करतो गता विमुक्तिमथ।
आख्यत् स्वराज्यचिह्नं जनकल्याणावहं भूम्ना।।१२२।।

इसके अतिरिक्त (इन्दिरा के शासन काल में) कम उपज वाली या एक एकड़ तक सीमित भूमि पर लगान हटा देने से जनता का बहुत उपकार हुआ और यह निश्चय स्वराज्य का चिह्न बन गया।

Her decision for abolution of tax on low-yielding land or less than one acre resulting much relief to the people, proved to be a true token of independence of the country.

प्रपथानां निर्माणैर्ग्रामान् कर्तुं च राजपथसक्तान्।
पेयाम्बुसंविधियुतान् नित्यं तत्क्लेशनिहतानथ।।१२३।।
सद्बीजोर्वरकाणां काले दानेन वृद्धयेऽथ कृषेः।
सरघाकोशकृमीणां पालनशिक्षाविधानैश्च।।१२४।।
कृषिफलमूल्यस्थिरताहेतोः क्रयकेन्द्रसन्ततिप्रथनैः।
सततं च सा प्रयेते कृषकाणां भूति–संवृद्ध्यै।।१२५।। (विशेषकम्)

गाँवों को पक्की सड़कें बनवा कर मुख्य मार्गो से जोड़ने, पीने के पानी के अभाव से तंग गाँवों में उसका प्रबन्ध करने, खेती की पैदावार बढ़ाने के लिए ठीक समय पर उत्तम बीज और रासायनिक खाद सुलभ कराने, लोगों को शहद की मक्खियां व रेशम के कीड़े पालने की शिक्षा देने, तथा खेती की उपज की कीमत न घटने देने के लिए उचित मूल्य पर उसे खरीदने के लिए बहुत से केन्द्र स्थापित करने के रूप में उसने किसानों की आर्थिक स्थिति सुधारने का निरन्तर प्रयत्न किया।

She also took pain to enhance the lots of the farmers through construction of roads for connecting the villages with high ways, by providing with the drinkable water to the people suffering for want of it, with the aim of growth in food production, timely supply of good seeds, fertilizers, arrangement of proper training in rearing honey bees and Silkmoths; moreover, by setting up a series of purchase-centres of agricultural production in order to stabilize foodprices to protect farmers from exploitation by unscrupulous traders.

क्षेत्रे जानपदे वा बहुशः संस्थापिताः कलाशालाः।
बाला न विप्रकर्षाद् यथोद्विजेरन् क्वचित् ताभ्यः।।१२६।।

(उसके शासन काल में) देहाती क्षेत्रों में स्थान–स्थान पर बहुत सी पाठशालाएँ खोली गईं ताकि बच्चे दूरी के कारण वहाँ जाने से न घबरायें।

(During the period of her rule) schools in large number were opened in rural areas so that children should not fear of their long distance.

क्षेमाय चातुराणां दक्षभिषग्भिः प्रसाधितानि किल।
स्थानानि चिकित्साया आसन् वा स्थापनीयानि।।१२७।।

नीति के अनुसार रोगियों के कल्याण के लिए निपुण चिकित्सकों द्वारा चलाये गये अस्पताल जगह जगह खोले जाने का निर्णय लिया गया था।

(According to the policy announced) establishment in large number, of hospitals well equipped with trained doctors, was planned to facilitate sick people.

ईतिकृतसङ्कटेषु क्षितिकरमर्षणमुखैस्तु साहाय्यैः।
कृषकजनक्लेशानां तनुता–सम्पादनं चेष्टम्।।१२८।।

ईतियों[1] के कारण कृषि के लिए विपत्ति उपस्थित होने पर लगान की माफी आदि उपायों से सहायता के द्वारा किसानों के कष्टों में कमी लाने का यत्न भी किया गया।

She also tried to lessen losses of farmers in nalural calamities by helping them through various steps like exemption of tax etc.

विश्रमकालेऽपि तदीयायोपायप्रगुणनोच्चितैः शिल्पैः।
तेषां विभूतिहेतोर्यत्नानां चेयता दृष्टा।।१२९।।

खेती से खाली समय में आय बढ़ाने में सहायक टोकरी बुनना आदि कारीगरियों से किसानों की आर्थिक स्थिति सुधारने का विचार किया गया था।

---

१. छः प्रकार की ईतियां कही गई हैं १. अतिवृष्टि excessive rains, २. अनावृष्टि draught ३. टिड्डियां locusts ४. चूहे rodents ५. पक्षी birds ६. पड़ोसी राजा rulers in neighbourhood.

She also thought of finding ways for enhancing income of farmers in lean period, by providing them proper training in various monitorily benefitting arts like basketweaving etc.

ग्रामस्थकारुवर्गस्योन्नतिहेतोश्च नूत्नयन्त्राणाम्।
सुलभत्वापादनया शिल्पविकासस्तया ध्यातः।।१३०।।

उसने ग्रामीण कारीगरों की तरक्की के लिए नई नई मशीनें पहुँचा कर ग्रामीण उद्योग धन्धों के विकास का निश्चय किया।

She also decided to help development of mannual arts with supply of the latest machinery for the benefit of rural artisans.

श्रमिकभृतिवेतनेद्ध्या सेवावसरप्रसारसञ्जननैः।
वार्ताभावार्तानामार्तेरार्तिश्च निर्दिष्टा।।१३१।।

इन्दिरा गाँधी ने मजदूरों की मजदूरी बढ़ाकर तथा रोज़गार के अवसर उत्पन्न करके बेरोजगारों के कष्ट दूर करने का निर्देश दिया।

She also directed the official machinery to remove difficulties of labourers and those suffering from non-employment in their wages and creation of chances for more employment.

इत्थं जनसमवायोदयनकथाभासभव्यचरिताऽपि।
रविरिव घूकस्य बभूवासावाक्रोशपात्रमपि।।१३२।।

इस प्रकार यद्यपि उसने जनता की उन्नति की झलक दिखाने वाले अच्छे काम भी किये तो भी वह बहुत से लोगों को उसी प्रकार नहीं सुहाई जैसे उल्लू को सूरज।

Although she constantly took various steps for the betterment of people's cause, still was disilked by some sections like the sun by an owl.

गणतन्त्रसमा शासनरीतिः का नाम भवतु कल्याणी।
भीष्मोक्तास्ते दोषा यदि न बलात्तां खिलीकुर्युः।।१३३।।

यदि भीष्म की बताई हुई बुराइयां उत्पन्न न हों तो प्रजातन्त्र के समान जनता का हित करने वाली शासन पद्धति कौन सी हो सकती है।

There can be no better system of ruling than democracy on this earth unless the short-comings pointed out by Bhisma erupt in it.

गणतन्त्रं दलतन्त्रं श्रयते तच्चापि सदसि बहुसंख्याम्।
तस्याश्चिन्तेह ततो नेतु र्दृष्टिं तु संवृणुते।।१३४।।

जनतन्त्र शासन समिति में किसी दल की सर्वाधिक संख्या पर निर्भर रहता है। इस कारण शासक दल के नेता को अपना शासन बनाये रखने के लिए जनहित के स्थान पर अपने दल की बहुसंख्या बनाये रखने की चिन्ता अधिक रहती है।

A democracy depends upon majority of certain party in the parliament. Hence, the leader of the ruling party remains more concerned with maintenance of majority of his party than caring for welfare of the people.

अङ्गुलयः पञ्चमिताः पाणौ न भजन्ति चेज् जगति साम्यम्।
जनताःकथं भजेयुर्निसर्गतो या विषमशीलाः।।१३५।।

जब कि संसार में मनुष्य के हाथ की पाँचों उंगलियां एक सी नहीं होतीं तब भला स्वभाव से ही भिन्न चरित्र वाले मनुष्य समान रूप से भले या बुरे कैसे हो सकते हैं।

If in the world, all the fingers in hand are not equal in length, how can all the members of a party be equally good or bad?

पात्रेसमिता लोकाःकीटाणव इव दलानि निविशन्ते।
भास्करमिव मन्देहाः[1], प्रमुखं परिवृण्वते चापि।।१३६।।

अवसरवादी लोग प्रायः विषैले कीटाणुओं की भाँति शासक दल में घुस जाते हैं और वहाँ उसके नेता को उसी प्रकार घेर लेते हैं जैसे कि मन्देह नामक राक्षस सूर्य को।

Opportunist people like germs, somehow manage to enter the party and surround the leader like mandeha demons to the Sun.

---

१. पुराणों के अनुसार मन्देह नाम के असुर सूर्य को घेर लेते हैं। उनके निवारण के लिये इसी कारण सूर्योदय से पूर्व सन्ध्या करना उचित कहा गया है।

स्वार्थैकसिद्धिनिरता लोकहितं ते विधाय पृष्ठगतम्।
स्वं साधयन्ति कामं कुख्यातिं नायकस्याथ।।१३७।।

वे अवसरवादी लोग जनता का कल्याण भुलाकर केवल अपना उल्लू साधते हैं और दल के नेता को बदनाम कर देते हैं।

Those selfish people keeping aside welfare of the people, remain busy with grinding their own axe and thus bring ignominy to the head of the party.

तिमिरं तिरयति दीपः प्रदीपयन् कक्षमात्मनो भासा।
रक्षति च स्वाधःस्थं मन्दप्रसरो नु किं तत्र?।।१३८।।

जलता हुआ दीपक कमरे को अपने प्रकाश से जगमग करता हुआ वहाँ से अँधेरे को मिटा देता है पर अपने नीचे के अँधेरे को नहीं छेड़ता। क्या उसकी पहुँच वहाँ नहीं होती?

A burning lamp, while illuminating the room, despels the darkness from there but does not harm that lying underneath, as if its light fails to reach there.

स्नेहेन येन दीपो ज्योतिः स्पृष्ट्वा प्रदीपतां लभते।
कज्जलमलं स तन्वन् स्वतलं क्लिश्नाति तेनैव।।१३९।।

दीपक जिस तेल से जलकर प्रकाशक बनता है, उसी तेल से काजल बनाकर अपने निचले भाग को मैला कर देता है।

With whose help the lamp is lit and gets light, with the same oil creating lampblack under own bottom, makes that filthy.

अशुचिनि भाण्डे पतितं सीदति लघु चेत् पयो विशुद्धमपि।
तादृक् समाजदोषैः कथं न तन्त्रं खिलीक्रियते।।१४०।।

यदि साफ दूध भी गन्दे बर्तन में पड़ कर तुरन्त फट जाता है तो ऐसी सामाजिक बुराई सरकार को दूषित क्यों न करेगी।।

If pure milk put in an unclear utensil gets sour soon then how is it possible that such selfish people would no spoil the government machinery.

अविचलशासनकामा गुणगणरामापि विधुतपरिणामा।
अन्यदलेषु सभामा साऽभूत् सन्निर्णये वामा।।१४१।।

वह इन्दिरा गांधी अनेक गुणों से युक्त होने पर भी भावी परिणाम की ओर से आँखें मूँदे, अपनी सरकार को स्थायी बनाये रखने के लिए विरोधी दलों पर कुपित होकर विपरीत कार्य करने लगी।

Indira, though adorned with so many qualities, having failed to foresee the result, in order to make her rule perpetual, committed atrocities against the opposition and began to take wrong decisions.

स्वार्थैकसिद्धिचटुलैः स्वगणसदस्यैर्विमोहिता सुमतिः।
आत्ययिकीनामपि सा जगाम नान्तं समस्यानाम्।।१४२।।

समझदार होने पर भी केवल अपना उल्लू साधने वाले अपने दल के कुछ सदस्यों के बहकावे में आकर वह तुरन्त सुलझाने योग्य उलझनों को भी न सुलझा सकी।

Inspite of being very intelligent, Indira being misled by some members of her party who were cunning enough to grind their own axe, failed to solve even urgent problems.

बहुमतमदिरामत्तैर्मन्त्रिजनैर्दलगतैरशुचिभिः सा।
विहितामविनयलीलां सेहे दधती गजनिमीलाम्।।१४३।।

संसद में अपनी संख्या अधिक होने के नशे में धुत अपने मन्त्रियों या पार्टी के बेईमान सदस्यों द्वारा किये गये गलत कामों की वह जानबूझ कर अनदेखी करती रही।

She also deliberately ignored misdeeds of her ministers as well as party members being arrogant for their majority in the parliament.

धर्मेषु निर्विशेषा संनिदधाना तदीयविदथेषु।
सर्वांस्तु संजिघृक्षुर्हन्त! न फलिनी क्वचित्त्वासीत्।।१४४।।

वह इन्दिरा सभी धर्मों को समभाव से देखने के कारण उनके अनुयायियों को अपने पक्ष में करने के लिए समान रूप से उनके उपासना गृहों में जाया करती थी, परन्तु कहीं भी अपने उद्देश्य में सफल न हो सकी।

Moreover, she being secularminded and having equal regard for all the religions, used to visit their religious places with the aim of bringing all of them to her fold, but alas! she succeeded in winning over none.

शासनमहातरोरपि मूलोत्खनने चिरात् प्रवृत्तस्य।
भ्रष्टाचारमहाखोरुद्धरणेऽभून्न दृढदण्डा।।१४५।।

वह लम्बे अरसे से चूहे की तरह शासन तन्त्ररूपी वृक्ष की जड़ खोदते भ्रष्टाचार को उखाड़ फेंकने के लिए दृढ़ता न बरत सकी।

She also failed to take bold or stern measures to uproot the corruption weakening her administration.

विमतजनशोधहेतोः स्वजनैरुत्थापितश्च वेतालः[1]।
नाराधितो यथावत् तस्या आसीदरिष्टाय।।१४६।।

विरोधी दलों को मिटाने के लिए उसके दल के लोगों ने षड्यन्त्र के रूप में जो वेताल? खड़ा किया वह ठीक पूजा न होने से उल्टा उसके लिए सिर दर्द बन गया।

The ghost in the form of conspiracy invited by her partymen for elimination of opposition turned troublesome to herself due to not being well entertained.

ग्रामण्यक्षपटलिकैरन्यैश्च खलैर्निजार्थसिद्धिरतैः।
संभूय गूढचरितैर्विहितो लेखे स्थितो यत्नः।।१४७।।

केवल अपना उल्लू साधने में लगे गाँव के मुखिया, पटवारी तथा अन्य सरकारी कर्मचारियों ने गुपचुप मिलकर सारी योजनाओं की केवल कागजों में खानापूरी कर दी।

Dishonest village-heads and government officials dealing with the land records and planning being busy with grinding their own axe, made false entries about their accomplishment.

लुब्धैरथ चाधिकृतैः सुसंहतैः स्वार्थसाधनाहेतोः।
नैविदिकादिसहायै र्वित्तमुदरसात् कृतं बहुलम्।।१४८।।

इसके अतिरिक्त दूसरे लालची अफसरों ने केवल उल्लू साधने के लिये मिलकर ठेकेदार आदि की सहायता से बहुत सा धन हड़प लिया।

---

1. वेताल एक प्रकार का भूत होता है जो कि सब काम कर देता है पर पहले पूजना पड़ता है, रुष्ट होने पर उल्टा बुलाने वाले का अनिष्ट कर देता है।

Moreover, other Treacherous and selfish officers conspiring with the contractors, embezelled huge amounts sanctioned for development works.

बहुमतलाभविजयिभिः स्वदलसदस्यैश्च कूटकर्मरतैः।
आत्मक्षेत्रसुसीमा विकासहासः कृतो निखिलः।।१४६।।

इसके अतिरिक्त, बड़ी संख्या में जीते अपने दल के सदस्यों ने जालसाजी करके सारा विकास कार्य केवल अपने–२ इलाके तक सीमित कर दिया।

Besides this, her party members, who had won the election with high number of Votes, indulging in illicit acts, restricted all the development to their respective areas only.

अस्थायिनिर्णयानां रुचकविलोलां गतिं समास्वाद्य।
अपरे बलं श्रयन्ते स्वार्थेनोद्दीपितोत्साहाः।।१५०।।

किसी विषय पर स्थायी व्यवस्था न होने की दशा में स्थिति को डाँवाडोल देखकर स्वार्थी लोग उसका लाभ उठाने के लिए बल पकड़ लेते हैं।

In case of temporary dicisions taken by the supreme authority even on the important matters, interested people expecting benefits from uncertainty of the conditions, are emboldened (to turn the table to their own side).

पञ्चापस्य विभागे पुनरपि चण्डीगढस्य नगरस्य।
विधिरात्मनः शमोऽपि क्षिप्तौ संशीतिदोलायाम्।।१५१।।

पञ्जाब राज्य को पंजाब व हरियाणा इन दो राज्यों में बाँट देने पर भी इन्दिरा ने चण्डीगढ़ नगर का भविष्य और अपनी सुख शान्ति सन्देह व खतरे में डाल दिये।

Despite division of Punjab into Two different states viz. Punjab & Haryana, she threw her welfare in suspicion by postponing decision about the future of Chandigarh City (for merger in either state).

यवनाँश्च पूर्ववङ्गादसमभुवं दुरभिसन्धिना प्रहितान्।
सत्यपि लोकविरोधे प्रत्यादेष्टुं न साऽक्षमत।।१५२।।

इसके अतिरिक्त पाकिस्तान द्वारा पूर्वी बंगाल से कुटिल चाल से आसाम में भेजे गये मुसलमानों को जनता के घोर विरोध करने पर भी वह न लौटा सकी।

In addition, she, despite wide protests from the people, failed to turn back the muslims sent from eastern Bengal in large number by Pakistan nefariously.

भूयोऽपि गंगदत्तैः परोपजप्तैः स्वगेहनाशाय।
मन्दविषो रिपुरेकैरासीदामन्त्रितो गूढम्।।१५३।।

कुछ लोगों ने गंगदत्त[1], का सा आचरण करते हुए दूसरे राष्ट्रों के सिखाने पर अपने कुल (देश) को उजाड़ने के लिए मन्दविष जैसे शत्रु को फिर से घर बुलाया।

Some people (acting like Gangadatta) being instigated by other nations repeated the mistake of secretly inviting Mandavisha (a serpent) like enemy with the purpose of destroying their own country (family).

राष्ट्रान्तरोपजप्तैर्द्रविणायुधपृष्ठपोषसाहाय्यैः।
शिष्यैरकालिसंज्ञैः कालीकृतमाननं जात्याः।।१५४।।

दूसरे राष्ट्र (पाकिस्तान) द्वारा धन व शस्त्रास्त्रों की सहायता देकर उकसाये गये (कुछ) अकाली सिखों ने (उपद्रव मचाकर) अपने समाज को कलङ्कित कर दिया।

(Some) Akali sikhs, instigated by other nation (Pakistan) with the help of money & weapons, brought ignominy to their community by creating Chaotic situation (in Punjab).

निजराज्यलोभकुषितैः कालमकालेऽपि मन्त्रयद्भिर्यैः।
यमदूतैरिव विष्वक् पञ्चनदे यम उपाहूतः।।१५५।।

उन्होंने (पंजाब में) अपना (पृथक्) सिख राज्य स्थापित करने की इच्छा से यमदूतों की भाँति असमय में ही मृत्यु का ताण्डव मचाते हुए पंजाब में यम को बुला दिया।

They with the aim of setting up a separate Sikh State in Punjab, acting like envoys of Yama (the death god) invited him to Punjab by creating doom's day like situation alround.

---

१. गंगदत्त एक मेंढक था, उसने अपने रिश्तेदारों को मरवाने के लिए मन्दविष नामक साँप को अपने रहने के स्थान पर बुलाया। साँप ने एक–२ करके उसके रिश्तेदारों को खाने के बाद उसके लड़के को भी खा लिया। गंगदत्त ने किसी प्रकार भाग कर अपनी जान बचाई।

गुरुभिरभाणि सुवाणी याऽमृतधारेव भुवनकल्याणी।
विस्मृत्य तां स्मृतं तै र्गुरुमतमातङ्कवादस्य।।१५६।।

सिख गुरुओं ने अमृत के समान लोक का मंगल करने वाली जो मधुर वाणी उचारी थी, उग्रवादियों ने उस शिक्षा को भुलाकर उग्रवाद को गुरुओं का सिद्धान्त मान लिया था।

They forgot the sermons of their gurus fraught with the aim of welfare of the whole mankind and adopted terrorism as their principle.

ग्रन्थिग्रथितमनोभि र्ग्रन्थिभिरुदचारि कापि गुरुवाणी।
द्वारं यया गुरूणां यमदुर्गद्वारतां गमितम्।।१५७।।

मन में द्वेष की गाँठ बाँधे हुए गुरुद्वारों के ग्रन्थियों ने उन्हें कुछ ऐसे उपदेश दिये जिनके प्रभाव से उन उग्रवादियों ने गुरुद्वारों को भी यमराज के किले का दरवाजा बना दिया।

Priests in gurudwaras sung such sermons full of impulse of enmity for non-sikhs (especially Hindus) that instigated terrorists to turn gurudwaras into the doors of Yama's fortress.

विषमोऽयं राजनयस्तिमिरं जनदृशि बलात्तथा तनुते।
पश्यति यथा न सम्यक् स्पृशति न सा वा पुरःस्थमपि।।१५८।।

यह राजनीति बहुत टेढ़ी है; वह न चाहने पर भी मनुष्य की आँखों में ऐसा मोतियाबिन्द उत्पन्न कर देती है कि या तो उन्हें कुछ का कुछ दिखाई देने लगता है या सामने वर्तमान (वस्तु या सत्य) को भी नहीं देख पातीं।

Politics is very dangerous. It forcibly creates such blindness (and cataract) in the eyes of men, inflicted by which one begins to see something otherwise or fails to notice one even standing before.

दाक्षिण्यहतश्च जनो जनसङ्ग्रहणे सदा निबद्धरतिः।
जानन्नपि नहि वदति स्फुटमपि सत्यं प्रकोपभिया।।१५९।।

सबसे बनाये रखने की भावना वाला मनुष्य सबको अपने पक्ष में रखने के लिए प्रयत्नशील हुआ प्रत्यक्ष सच्चाई को जानता हुआ भी 'कहीं बुरा न मान जाये', इस डर से साफ–साफ नहीं कहता।

One overcome by politeness, trying always to keep every one in his fold, despite knowledge of facts, dares not to express that for fear of annoyance of other party.

येषां रक्षाहेतो र्गुरुभिः पाणौ कृपाण आकलितः।
तानेव नामशेषान् कर्तुं शिष्यैर् धृता गुलिका।।१६०।।

जिन हिन्दुओं की रक्षा के लिए सिख गुरुओं ने (सन्त होते हुए भी) हाथ में तलवार पकड़ी थी, उन्हीं को निर्मूल कर देने के लिए अब सिक्खों ने बन्दूकें उठाई।

Now terrorist sikhs were holding guns to eliminate the same Hindu community, in order to protect whom their gurus, though saintly, were forced to hold sword.

भवनं हि गर्भभवनं कान्तारपथीकृताश्च राजपथाः।
यानान्यवयानानि क्षेत्राण्यगमन् श्मशानत्वम्।।१६१।।

(उस समय) उग्रवादियों ने तहखानों को निवास गृह, राजमार्गों को जंगल के मार्गों (की भाँति सुनसान), सवारी की गाड़ियों को यात्रा के अयोग्य और खेतों को मुर्दघाट बना दिया था।

(During that time) terrorists used underground rooms as their abode, turned highways into roads of jungle, means of journey became unfit for travelling and farms were led to the condition of cremetory.

राज्ञां चरोऽत्र चक्षुः पश्यति यतिवद् रिपोरुरःस्थमपि।
तच्च विकारोपहतं स्पृशति न शैलं किमुत वृत्तम्।।१६२।।

इस संसार में गुप्तचर शासकों की आँख माने गये हैं जो कि योगी की भाँति शत्रु के मन का हाल भी जान लेती है। पर यदि उसमें खराबी आ जाये तो सामने का पहाड़ भी दिखाई नहीं देता, समाचार का तो कहना ही क्या है।

Spies in this world are stated to be ruler's eye which like an ascetic can unearth secrets from even enemy's bosom, but if suffering from some defect, it fails to notice even a mountain standing before.

धर्मो गाङ्गं जलमिव हरति मलं चेत् सुसेवितं सुधिया।
स च राजनीतिनदमलकलिलैः स्पृष्टो रुजत्यन्तः।।१६३।।

धर्म गङ्गाजल की भाँति पवित्र होता है; यदि अच्छी भावना से (और श्रद्धा से) उसका पालन हो (उपयोग हो) तो वह भीतर की भी बुराई को दूर कर देता है। परन्तु राजनीति रूपी गन्दे नाले के पानी से मिलकर मन को विकृत कर देता है। (भीतर रोग उत्पन्न कर देता है)

Religion is pure like the water of Ganga, if applied (and used) sincerely (with faith), purifies even one's soul. But the same being poluted by the politics (and dirty water of a nullah) polutes the mind.

विषमपि रसायनं स्यात् संशोध्य प्रगुणितं रसज्ञैश्चेत्।
भुजगैस्तु पयः पीतं गरलं सत् प्राणिनो हन्ति।।१६४।।

रसविद्या को जानने वाले वैद्यों द्वारा शुद्ध करके अधिक गुणवान बनाया गया जहर भी रसायन–शक्तिदायक वस्तु बन जाता है। परन्तु सर्पों द्वारा पिया गया दूध भी विष बन कर प्राणियों को मार डालता है।

The poison if purified and made more qualitative by the chemists, becomes elixir vitex. Whereas the milk if drunk by a snake, turns into the killer venom.

संहतिरत्र जनानां सत्सङ्कल्पा भुवोऽप्यघं हरति।
भृत्यानां दुर्मनसां सैव च तन्त्र–प्रकोपाय।।१६५।।

लोगों की एकता संसार भर के कष्टों को हर लेती है परन्तु दुर्भावना भरे कर्मचारियों के एक हो जाने पर सारी शासन व्यवस्था बिगड़ जाती है।

Unity of the people can remove all the ills of the world. But the same formed by the employees with bad intentions, spoils the whole administration.

पथि तत्र विश्वसन्तः सन्तोऽसन्तोऽपि संज्ञया सन्तः
हिंसाकृतिषु हसन्तः सन्तोऽभूवंस्तदाऽसन्तः।।१६६।।

आचरण से वैसे न होते हुए भी सन्त कहलाने वाले लोग उस उग्रवाद पर भरोसा रखते हुए और उग्रवादियों के हिंसक कामों को देखकर हँसते थे। इस प्रकार वे साधु लोग भी उस समय दुर्जन बन गये थे।

The saints by the name alone, wicked in character, their leaders who had faith in the path of terrorism, amused with bloody acts of those terrorists, had lost their saintly character.

हरिमन्दिरं तदानीं दुर्गमभूत् किं न यमपुरं नवलम्।
यस्मिन् सुराङ्गनानां बभौ विलासो यमप्रथितः।।१६७।।

उन दिनों हरमन्दर साहब (स्वर्णमन्दिर और भगवान का स्थान) जहाँ सब लोग सुख पूर्वक जा सकें, क्या लोगों की पहुँच से बाहर और किले के रूप में सुरक्षित नया यमराज का नगर नहीं बन गया था जहाँ कि मौत के खेल के साथ सुरा और सुन्दरी का दौर चलता था (तथा यमराज के आदेश के अनुसार अप्सराओं का नृत्य हुआ करता था)।

During those days Harmander (Harimandir or Swarnamandir) had taken position of a new fortress of hell, where the game of wine & women along with killing ran undesturbed (and dance of nymphs took place with the orders of king Yama).

स्वाधीननिर्णयात्मप्रत्ययनेयाऽपि सेन्दिरा विहिता।
अयथावद् वृत्तकथैः स्वदलसदस्यैस्तु विभ्रान्ता।।१६८।।

यद्यपि इन्दिरा गांधी (समस्या का समाधान करने के लिए प्रधानमंत्री के नाते) कुछ भी उपाय बरतने को स्वतन्त्र थी और वह अपने विश्वास के अनुसार चलती थी तथापि अपने ही दल के सदस्यों ने उसे सच्चाई न बताकर भ्रम में डाले रखा।

Although Indira was free to take any action (to solve the problem) and used to decide at her own, she was then misled by some members of her own party with false reports.

वृतिरपि चरति कृषिं चेत् क इह परित्रायतां नु तामपरः।
यद् रक्षकैः स्वरक्ष्या निजघ्निरे पक्षपोषपरैः।।१६९।।

यदि बाड़ ही खेती को खाने लग जाये तो भला उसे दूसरा कौन बचा सकता है? जो कि पुलिस के सिपाहियों ने (अपने ही धर्म को मानने वाले होने से) उग्रवादियों का साथ देते हुए उन्हें ही मार डाला जिनकी रक्षा के लिए उन्हें नियुक्त किया गया था।

No body can save the crop if eaten by the hedge itself, as the policemen expected to protect the victims of atrocities sided with their co-religious brethern by killing Hindus instead.

रक्षापुरुषाशङ्का उग्रा अथ संश्रिता गुरुद्वारम्।
तेनुः पिशाचलीलां कालेकाले परिक्रान्ताः।।१७०।।

तब उग्रवादियों ने पुलिस के डर से गुरुद्वारे में शरण ले ली और वहाँ से जब तब निकलकर हिंसापूर्ण कर्म करने लगे।

Terrorists afraid of police-action, took refuge in gurudwara and committed ghastly acts occasionally coming out therefrom.

ते चापहृतविमाना जनयन्तो लोकसंज्वरं बहुशः।
पाकेऽपि निर्विशङ्काश् चक्रुरिवाराजकं राष्ट्रम्।।१७१।।

उन्होंने वायुयान का अपहरण करके अनेक प्रकार से जनता को सताते हुए निर्भय होकर पाकिस्तान में भी अराजकता फैला दी।

Those terrorists besides creating havoc (in India), also hijacked a plane and thus created situation of anarchy in even Pakistan.

तैरिति परोपजप्तैर्देशध्रुग्भिश्च लोकशर्महरैः।
राष्ट्रस्य सुरक्षाऽथो संहतिरपि संशये क्षिप्ते।।१७२।।

इस प्रकार दूसरे राष्ट्रों द्वारा सिखाये गये और जन साधारण को चैन से न रहने देने वाले उन देश द्रोहियों ने भारत की सुरक्षा और एकता भी खतरे में डाल दी।

This way, those traitors instigated by other countries and teasing people in general, put the security & unity of the nation in danger.

पक्षेऽथ विपक्षेऽपि च समरतितां संश्रितानि सव्याजम्।
विस्रम्भार्हाणि कथं पुर–रक्षा–साधनानि स्युः।।१७३।।

यदि पुलिस और सैनिक किसी बहाने अपने देश की सेवा में रहते हुए शत्रु से भी मिल जायें तो उन पर भरोसा कैसे किया जा सकता है?

If the police and army entrusted with security of the nation despite being in service of their nation, have link with enemy also, they can never be dependable.

इत्थं परबलदृप्तैर्दुराशयैस्तैस्तथोग्रकर्मकरैः।
आह्वानमिवाचरितं शासकवर्गस्य सक्षोभम्।।१७४।।

इस प्रकार अन्य (राष्ट्रों) से शक्ति पाकर उद्दण्ड हुए, राष्ट्र के प्रति दुर्भावना रखने वाले

उन आतंकवादियों ने सरकारी अधिकारियों को विचलित करते हुए ललकार सा दिया।

Thus those terrorists emboldened with support from enemies of India and disloyal to their own nation as if challanged the government by shaking that.

शान्तेऽपि मनसि नेत्र्या अर्कोपल इव परप्रतापभवः।
ज्वलनः सहसोदभवत् प्रज्वालो दस्युदाहाय।।१७५।।

ऐसी स्थिति में शासन की प्रधान इन्दिरा के शान्त मन में भी उन उपद्रवियों के प्रबल हो जाने के कारण उन्हें नष्ट करने के लिए उसी प्रकार तीव्र क्रोध उत्पन्न हो गया जैसे कि आतसी शीशे पर सूर्य की किरणें पड़ने से आग प्रकट होती है।

That challange resulted in arousing fury even in peaceful mind of the head of the government (Indira) for elimination of rogues in the same way as fire is kindled in a sunstone by reflection of sun-beams.

नेच्छन्त्यपि जनतानां शर्मव्याकोपकोपिता साऽथ।
सैन्यं वैरिबलघ्नं प्रायुङ्क्त स्वास्थ्यमाचरितुम्।।१७६।।

यद्यपि वह स्वर्णमन्दिर में (उसके धर्मस्थल होने से) बल प्रयोग नहीं करना चाहती थी, तथापि जनता की सुरक्षा लुप्त हो जाने से क्रुद्ध होकर उसने उन विद्रोहियों की शक्ति नष्ट करने के लिए सेना को नियुक्त कर दिया।

Though she did not like to use force against Swarnamandir with regard for a religious place, but concerned for insecurity of the people, had to decide to despatch forces to check them.

युगवसुनिधिशशिवर्षे रसवति मासे दिनेऽनलप्रमिते।
सैन्यं सुवर्णमन्दिरमरुणत् तानुत्पथान् यन्तुम्।।१७७।।

३ जून, सन् १९८४ को उन उपद्रवियों को दण्डित करने के लिए सेना ने स्वर्णमन्दिर को घेर लिया।

The army undertook the blue star operation by surrounding that Swarnamandir on the 3rd June, 1984 A.D. in order to punish those law-breakers.

भीमास्त्रबला असुरा अयनेषु कृतेषु संवृतात्मानः।
को वेद भटान् कियतः क्रूरास्ते निर्दयं जघ्नुः।।१७८।।

भयङ्कर शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित, क्रूर और (मन्दिर के भीतर) खड़े किये मोर्चो में छिपे असुरवृत्ति के उन आतङ्कवादियों ने न जाने कितने सैनिकों को मार डाला।

God alone knows, how many soldiers were killed by those demonlike cruels who were well equipped with highly sophisticated weapons and hid themselves behind the fronts raised therein.

साधर्म्यमात्रनिघ्नाः केचन सुभटा विपक्षपक्षपुषः।
दस्यून् ररक्षुरपरे सेवामपि तत्यजुः सरुषः।।१७६।।

कुछ सैनिक तो केवल समान धर्मवाला होने का विचार करके सरकार के विरूद्ध चलते हुए उन उग्रवादियों की रक्षाकर रहे थे तो दूसरों ने गुरुद्वारे पर सैनिक आक्रमण पर कुपित होकर सरकारी नौकरी ही छोड़ दी।

Some among those armymen on operation, being sympathetic, protected their co-religious brethern and others protesting use of force, resigned from service.

अन्ते प्रशिक्षिता अपि रिपुभिर्निभृतं त उग्रकर्माणः।
प्राणान् शस्त्रोच्चयमथ सैन्यैः प्रच्याविताः प्रसभम्।।१८०।।

अन्त में सैनिकों ने उन उग्रवादियों को जिन्हें शत्रुओं ने शस्त्रास्त्रों में भली प्रकार प्रशिक्षित किया था, मार डाला और कुछ को हथियार त्यागने को विवश कर दिया।

Those Terrorists were trained well by the enemies of India, the army, however, succeeded in finishing them or compelling to surrender.

शमिते ज्वरानलेऽपि न निर्वृतिमभजज् जनो न तच् चित्रम्।
अन्तर्हिते हि दोषे वैरुज्यं कोऽश्नुते लोके।।१८१।।

यह कोई अनोखी बात नहीं कि उस आक्रमण के समाप्त हो जाने पर भी जनता को चैन नहीं मिला। क्योंकि जब तक भीतर विकार हो, मनुष्य स्वस्थ कैसे हो सकता है?

No wonder if the people, inspite of that operation could not be safe. No one can be healthy till the cause of desease remains inside the body.

केचन हि दत्तगन्धाः साधर्म्यहितैस्तु दण्डिभिः पूर्वम्।
अपसृत्य ततो गूढं लोकस्यास्वास्थ्यमातेनु।।१८२।।

क्योंकि कुछ उग्रवादी समानधर्मी पुलिसकर्मचारियों से आक्रमण की सूचना पहले ही पाकर वहाँ से खिसक गये थे। वे जब तब जनता को सताने लगे।

Because some terrorists for having pre-information about operation from some co-religious officials, had already escaped from there. They occasionally tortured the people.

उन्मादिनां मतिःक्व? क्वाथ विवेको भवेद् विमतिकानाम्।
स्वं दोषमपश्यन्तो दुर्भावा इन्दिरायां यत्।।१८३।।

पागलों को सोच विचार की शक्ति कैसे संभव है ? जिनकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई हो, उन्हें भले बुरे की समझ कैसे हो सकती है ? क्यों कि उन उग्रवादियों ने अपने अपराधों पर विचार न करते हुये स्वर्णमन्दिर पर आक्रमण करने के निमित्त इन्दिरा को शत्रु मान लिया।

No insane has sense and a senseless man is not capable of discrimination between right or wrong, good or bad. This is why those terrorists, ignoring their own crime, became enemy to her.

उग्रैर्विहितामपि तामैक्षन्त न ये तथाप्यराजकताम्।
सैन्यप्रेषणमस्यास्तेऽपि प्रैक्षन्त बत काक्षम्।।१८४।।

अन्य सिख लोग भी उग्रवादियों द्वारा फैलाई गई अराजकता की अनदेखी कर के इन्दिरा द्वारा की गई सैनिक कार्यवाई को अनुचित मानते थे।

Other sikh people, too, ignoring anarchy created by those terrorists, did not like Indira's military action against them.

मलिनयति तिमिरमन्धङ्करणं लोकस्य रागिणश्चक्षुः।
विपरीतमेव पश्यति पश्यति यच् चेत् सुदर्शमपि।।१८५।।

मनुष्य को अन्धा बना देने वाला अविवेक (तथा मोतियाबिन्द) पक्षपाती (व परहेज न रखने वाले) मनुष्य की दृष्टि (विचार शक्ति व आँख) को ऐसी दूषित कर देता है कि या तो वह स्पष्ट वस्तु को भी नहीं देख पाती या कुछ का कुछ देखने लगती है।

Darkness created by partiality (and cataract caused by redness) blinds so much a prejudiced man that either he becomes totally senseless (void of eye sight) or takes (sees) every thing though quite clear, otherwise.

व्यालाःकथं सहेरन्न् अङ्कुशपातं निरङ्कुशाः सन्तः।
यन्तरि कोपान्तरिताः कामं प्राणै र्वियुज्यन्ते।।१८६।।

बिगड़ैल हाथी (और उपद्रवी लोग) भले ही मर जायें पर किसी का नियन्त्रण न मानने के कारण महावत (और शासक) पर क्रुद्ध होकर (उन्हें सीधे रास्ते पर लाने के लिये किये गये) अंकुश के प्रहार (दमन कार्य) को कहाँ सहते हैं ?

Vicious elephants (and rogues) annoyed with the driver (and ruler) would rather die but being out of control, do not tolerate a blow of hook (and use of force) given to curve (control) them.

न ध्यायन्तोऽविनयं ते स्वाचरितं चिरं जनाघकरम्।
अभिसन्दधु र्निगूढं प्राणान् हर्तुं तपस्विन्याः।।१८७।।

उन्हों ने बहुत दिनों तक किये जनता को सताने के अपने अवैध आचरण पर ध्यान न देते हुये (सैनिक कार्रवाई का बदला लेने के लिये) गुपचुप उस बेचारी इन्दिरा की हत्या का षड्यन्त्र रचा।

Those sikhs not minding their unlawful acts committed so long by torturing people, instead conspired secretly to kill that innocent lady.

पश्यति निजमपि वदनं सङ्कुचिताक्षो न मत्तमातङ्गः।
अपरांस्तु खिलीकुर्वन् स्वैर्दोषैर्हन्यते पश्चात्।।१८८।।

यह सत्य है कि मतवाला हाथी छोटी आँखें होने से अपने मुँह को भी नहीं देख पाता, वह दूसरे लोगो को सताता हुआ बाद में स्वयं भी मारा जाता है।

(Truly) a vicious elephant having small eyes, fails to see even his own mouth and teasing only others, is finally killed. (A narrow minded man does not see his own crime and puts blame on others.)

प्रकृतिपुरुषार्थविहितौ सर्गविसर्गौ गुणप्रभावकृतौ।
महदभियोगसहायावहङ्कृतिः केवलं स्पृशति।।१८९।।

यहाँ किसी को बनाना और मिटाना प्रशासन का कार्य है जो कि गुण दोष के विचार से किया जाता है। उसके लिये बहुत प्रयत्न करना पड़ता है (जो एक के बसका नहीं)। परन्तु अहङ्कार के कारण एक या प्रधान व्यक्ति को उसके लिये उत्तरदायी मान लिया जाता है।

To make or destroy some one is the duty of the government machinery which acts on merit or demerit. It requires great effort, that is not task of a single man. Yet ego makes the highest authority alone responsible for all that.

द्वेषाद् वा लोभाद् वा प्रमाददोषात् परोपजापाद् वा।
चाराणां गुह्यमभून् मुखे मुखेऽर्थोऽपि सन्निहितः।।१६०।।

यद्यपि इन्दिरा गांधी की हत्या के लिये किये जा रहे षड्यन्त्र की बात जन साधारण में चल रही थी। तो भी चाहे उसके प्रति शत्रुता के कारण या किसी लालचवश, या लापरवाही या शत्रुओं के सिखाने से गुप्तचरों के लिये यह रहस्य ही बना रहा।

Though possibility of conspiracy to kill Indira being hatched was at the tongue of everyone, if the CID failed to detect this point either for their grudge against her or lured by a handsome reward, or for their negligence. (They did not report it.)

दुर्दैववशादुग्रा आसन् सफला मनोरथे तु स्वे।
आमन्त्रणे च विपदां निर्दोषाणां सजातीनाम्।।१६१।।

दुर्भाग्य से उग्रवादी लोग (इन्दिरा की हत्या के लिये) अपनी इच्छा पूरी करने तथा अपने निरपराध समानधर्मियों की विपत्ति बुलाने में सफल हो गये।

As ill luck would have it, those terrorists were successful in achieving their goal and to invite, as a result, trouble to their innocent community.

युगवसुनिधिचन्द्रमिते (१९८४) वर्षे मासे च करणसङ्ख्ये बत!।
अन्त्येऽह्नि दुष्प्रभातं भातं तद् भारताकाशे।।१६२।।

आह! सन् १९८४, ३१ अक्तूबर को भारत में अशुभ दिन निकला।

Alas! On the 31st October, 1984, an inauspicious day dawned in India.

अन्तर्वर्मविहीनां छायाग्राहाय निर्गतां भवनात्।
विषमितरक्षासंविधिमसहायामिन्दिरामभयाम्।।१६३।।

छद्माङ्गरक्षकौ हा ! विस्रम्भाशङ्कितौ दुरभिसन्धी।
व्यन्तरसत्त्वान्तौ[1] तां गुलिकाभिः प्रसभमक्षिणुताम्।।१६४।।
(युग्मकम्)

जब इन्दिरा किसी प्रकार के सङ्कट के प्रति निश्शंक भाव से अकेली फोटोग्राफ के लिये अपने निवास गृह से निकली, उस दिन उसकी रक्षाव्यवस्था भी शिथिल थी, उसने भीतर बुलेट प्रूफ जाकेट भी नहीं पहनी हुई थी, (इस स्थिति का लाभ उठाते हुये) उसी के अंगरक्षक बने, हत्या के षड़यन्त्र में सम्मिलित बेअन्त सिंह और सतवन्त सिंह नामक दो सिख युवकों ने जिन से विश्वासघात की संभावना नहीं थी, सहसा उसे गोलियों से छलनी बना दिया।

When Indira unsuspicious of any mishap from any quarter, with security arrangement slakened, without wearing bullet-proof jacket inside, after coming out the house was proceeding all alone for a snap, Beant Singh & Satwant Singh positioned as her bodyguards with bad intention yet not suspected of breach of confidence, shot her dead with bullets.

गिरिराजसुताऽधृष्या सा सततं सिंहवाहिनी दुर्गा[2]।
संज्ञासिंहाभ्यामपि हिंस्राभ्यां धर्षिता च्छलतः।।१६५।।

वह इन्दिरा पर्वतराज हिमालय की पुत्री, शेरों की सवारी करने वाली तथा दूसरों से अभिभूत होने वाली न थी, वह सामान्य व्यक्तियों की पहुँच से बाहर थीं। तो भी हिंसक वृत्ति वाले उन नाम मात्र के सिंहों (मनुष्यों) द्वारा धोखे से मार दी गई।

(It was a tragic irony that) Indira even daughter of the king of mountains, always riding lions, generally inaccessible to the common people was treacherously killed by bloody men lions merely by name.

कृत्वेति लोमहर्षं साहसिकं कर्म गूढसैन्यहतः।
व्यन्तो बभूव सान्तः सत्त्वान्तश्चापि सत्त्वान्तः।।१६६।।

ऐसा रोमाञ्चकारी जोखिम भरा कार्य करके बेअन्त सिंह तो गुप्त वेष वाले सैनिकों द्वारा मार दिया गया और सतवन्तसिंह (घायल होकर) साहसहीन बन गया।

After committing such a ghastly hair-raising act, Beant Singh was shot dead by commandoes and Satwant Singh became seriously injured.

श्रुत्वा यं दुरुदन्तं विश्वं चुक्षोभ मारुतः स्तिमितः।
तेनोन्मत्ताः केचन शिष्या दीपे घृतं प्रादुः।।१६७।।

---

1. ये बेअन्त और सतवन्त के संस्कृतीकृत शब्द समिप्राय हैं। व्यन्तर एक भूत होता है जो अनिष्ट पहुँचाता है। सत्त्वन्त से आशय है मन से उच्च भाव चले गये।
2. ये विशेषण देवी दुर्गा का भी बोध कराते हैं।

इस दुर्घटना को सुन कर सारा संसार विचलित सा हो गया, पवन चलनी भी बन्द हो गई, परन्तु कुछ सिखों ने प्रसन्नता से पागल होकर घरों में घी के दीये जलाये।

After hearing this tragic news the whole world was stunned , the wind stopped blowing but some sikhs being joyous, kindled lamp with ghee.

तत्रोज्ज्वलिता च शिखा प्रज्वालकगृहविभूतिपरिदीप्ता।
अभिमूय विदोषानपि चक्रे सशुचः सजातीयान्।।१६८।।

उन दियों की लपट ने घी के दिये जलाने वालों के घरों को प्रकाशित करने के बाद सामान के साथ राख ही नहीं बना दिया बल्कि दूसरे अपने समान धर्म वाले बन्धुओं को भी (जिनका इन्दिरा की हत्या से कोई लेना देना न था) प्रभावित करके उन के घर भी जल जाने से संकट में डाल दिया।

The flames of those lamps having illuminated their houses not only burnt to ash including belongings but also brought trouble to their co-religious people who were totally innocent.

वृष्टाश्चामू गुलिका विव्यधुरेकं नहीन्दिरावक्षः।
सह तेन वर्षकाणामपि विद्धो व्यापकः पक्षः।।१६९।।

(उन दोनो सिख युवकों द्वारा चलाई गई) गोलियों ने इन्दिरा की छाती को ही नहीं बींधा बल्कि अपने समाज के बहुत सारे निर्दोष व्यक्तियों को भी मृत्यु का ग्रास बना दिया।

The bullets triggered by those sikh youths did not pierce through the chest of Indira alone, but a large number of people belonging to their community also were hit by them.

तस्याः शरीरपातः केषां न मनांस्यपीपतत् सहसा।
यच् चरमदर्शनोत्कै र्जगदे स्वोत्सर्गकृद्भिश्च।।२००।।

उसके क्षत शरीर के पृथ्वी पर गिरने के साथ साथ कितने लोगो के मन नहीं गिरे यह उसके अन्तिम दर्शनों के लिये उमड़ी भीड़ तथा उसकी मृत्यु के शोक से आत्मदाह करने वालों की संख्या से स्पष्ट हो गया था।

The number of the people aggrieved with her death could only be imagined from the rush of crowds assembled to see her last or those who out of shock set themselves ablaze.

तस्या अन्तेन समं युगसन्ध्या व्याप विश्वतो विश्वम्।
यस्या भूतक्षयकृच् छाया चेतांसि पस्पर्श।।२०१।।

उसकी मृत्यु के साथ संसार में एक युग की समाप्ति का वातावरण बन गया। प्राणियों का नाश करने वाली जिसकी छाया ने लोगो के मन को प्रभावित कर दिया। उसकी मृत्यु से प्रलय का समय उपस्थित हो गया।

Along with death of Indira, the atmosphere of the end of an age (doom's day) was felt on the whole earth, shadow of which causing devastation of all the creation fell upon the minds of every one.

षट्षष्टिवयःप्रवया यौवतमदधूननी स्वगत्या सा।
कृत्यव्यापृतकाला लोकस्यादर्शभूताऽऽसीत्।।२०२।।

छयासठ की वृद्धावस्था होने पर भी अपनी फुर्ती भरी चालों से जवानों को धता बताने वाली वह सारा समय काम में बिताती हुई समाज के लिये आदर्श बन गई थी।

Though touching the age of sixty six, she surpassed the youth with swift gait, always busy with work had become ideal to the people.

नियतं सा गिरिपुत्री बभूव, कथमन्यथा तनूशेषम्।
तस्याः समिद्धबाष्पो गिरिराड् बिभृयान् निजाङ्केन।।२०३।।

वह इन्दिरा वास्तव में पर्वतपुत्री थी, नहीं तो पर्वतराज हिमालय उसकी अन्तिम राख को उमड़े बादलों के रूप में उभरे आँसुओं के साथ अपनी गोद में क्यों लेता।

Indira was undoubtedly daughter of the mountain (Himalaya). Otherwise, that should not have taken her last remains in his lap being full of tears (overcast with steam-clouds).

सेवाहेवाका ये क्षणमपि न नयन्ति ते वृथा सत्यम्।
यत् सा स्वकर्मनिरता विजहौ प्राणान् अविश्रान्ता।।२०४।।

यह सर्वथा सत्य है कि सेवा का व्रत लेने वाले अपना क्षण भर समय भी व्यर्थ नहीं गंवाते। क्योंकि इन्दिरा ने निरन्तर कर्म करते हुये ही अपने प्राण दिये।

Truly the people having taken pledge to serve others, never spend even a moment sitting idle. As she never taking rest died in harness.

तस्या रक्तकणो ऽपि व्रजतु गतार्थः कथं तपस्विन्याः।
सिञ्चन् यो मातृभुवं चक्रे तां सत्यसङ्कल्पाम्।।२०५।।

उस परिश्रमशील महिला के खून की एक बूँद भी व्यर्थ कैसे जा सकती थी जिसने अन्तिम समय में भी जन्म भूमि को सींच कर उसका मनोरथ सत्य कर दिखाया।

How even a single drop of blood of that energetic lady could go waste as that fulfilled her wishes by watering her motherland.

सा मानवी, न देवी गन्धर्वी नापि, नासुरी माया।
सत्त्वेन रजस्तमसी सह वर्तेते न तच् चित्रम्।।२०६।।

इन्दिरा केवल मानुषी थी, कोई देवाङ्गना या गन्धर्व कन्या नहीं थी, न ही (विलक्षण कार्य करने वाली) असुरों की माया (जादू) थी। मनुष्य होने के नाते उसमें गुण और दोष दोनो थे।
यह कोई आश्चर्य की बात नही कि जहाँ सत्त्व गुण रहता हो वहाँ साथ साथ रजोगुण व तमो गुण भी रहते हैं।

Indira was neither a goddess or semigoddess nor a spell created by any demoness. She was merely a woman (having both merits & demerits as her characteristic). Because, the quality sattva co-incides with Rajas & Tamas. (There is no rose without a thorn).

अन्यैरपि स्तुता सा रिपुकुलभैरवी महाकाली।
राष्ट्रस्य महालक्ष्मीः सरस्वती सारसंहर्त्री।।२०७।।

दूसरों ने भी उस इन्दिरा की 'शत्रुओं के लिये महाकाली के समान भयकंर, भारत राष्ट्र की जीती जागती महालक्ष्मी और (विज्ञान के) तत्त्वों का संग्रह करने वाली साक्षात् सरस्वती, कह कर प्रशंसा की है।

Other people, too, admired her through depicting as Goddess mahakali-formidable to her foes, Goddess Lakshmi embodied of the nation, Goddess Saraswati, the presiding deity of wisdom as well.

स गुणगरिमेन्दिराया व्यधाद् विरक्तानपीह रागवतः।
कीर्तिकथास्ताश्चित्राः प्रसभं यो गापयत्यद्य।।२०८।।

इन्दिरा गांधी के उन गुणों के ही महत्त्व ने उनको भी उसके प्रति आकृष्ट कर दिया जो उस से सहमति न रखते थे। वही उसके दिवंगत हो जाने पर भी लोगों को उसका यशोगान करने को विवश कर रहा है।

Same greatness of Indira's characteristics alone attracted even those people who did not see eye to eye with her; and now inspires people to sing her glorious stories arousing feeling of astonishment.

स्वप्नाः स्वर्णमया ये राष्ट्रायतिसंस्पृशस्तया दृष्टाः।
सहसा दिवं व्रजन्त्या स्वप्ना एवात्र ते न्यस्ताः।।२०६।।

उसने अपने राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य के जो सुनहले सपने देखे थे, एकाएक निधन हो जाने से वह उन्हें अधूरे ही छोड़ गई।

The golden dreams of nation's bright future she had dreamt, could not alas! be translated into facts for her sudden demise.

केदारखण्डसंस्तुतपौड़ीमण्डलपुरीसुमण्डनके।
डांगग्रामे हीरामणिरविकिरणप्रभाप्रसूतेन।।
गीतारामादधिगतशेषगवीसारसिद्धगिरा।
चन्द्रमणे र्विबुधमणेः स्यन्दितरसपानरसनेन।।
तस्या दिवमधिरूढाया रुद्राङ्कदिनेऽञ्जसा स्वतः स्फूर्ता।
युगवसुदिवसान् अविहतसमाधिपरिणतिरियं मूर्ता।।
गुणगीतिरिन्दिराया गीता कृतिना शिवप्रसादेन।
मासेऽद्धि च द्वितीये पूर्णा रसिकान् प्रमोदयतु।।

केदार खण्ड के अन्तर्गत पौड़ी गढ़वाल जिले में पौड़ी नगर के निकट स्थित डांग गांव के वासी पं० हीरामणि के पुत्र व विद्वद्वर गीताराम शास्त्री से व्याकरण तथा पं० चन्द्रमणि से साहित्यशास्त्र का ज्ञान प्राप्त करने वाले शिव प्रसाद द्वारा रचित इन्दिरा गांधी की मृत्यु होने के ग्यारह दिन के बाद अचानक आप ही आप स्फुरित हुई तथा चौरासी दिन के लगातार चिन्तन का साकार फल यह इन्दिरा गांधी की गुणगाथा २ फरवरी (१९८५) को समाप्त हुई। यह रसिक जनों को रुचिकर प्रतीत हो, ऐसी कामना है।

Bigotten by late Pt. Hiramani, resident of the village Dang adjacent to the city Pauri, district headquarter of Pauri garhwal, in the region of Kedarkhanda, Shiva Prasada who had proficiency in the grammar from the learned Pt. Gita Ram Shastri and in poetics from Late Pt. Chandra Mani Shastri, composed this poem containing description of Indira's merits, flashed for the spontaneously after eleven days after her sad demise and a result of continous thinking for 84 days, was complete on the 2nd February, 1985 A.D. May the people having aesthetic taste appreciate it.

कवि परिचय

निवासी	–	डांग पट्टी गगवाड़ स्यूं, जि. पौड़ी गढ़वाल (उत्तरांचल)
पिता	–	स्व. पं. हीरामणि बमराडा
माता	–	स्व० श्रीमती कालिन्दी देवी
जन्म तिथि	–	15 अक्टूबर 1924
वर्तमान निवास स्थान	–	भारद्वाज–निकेतन, हरिपुर काँवली, जनरल महादेव सिंह मार्ग, देहरादून फोन : 2620894
शिक्षा	–	एम.ए. ए.ओ एल्. (संस्कृत) स्वर्ण पदक प्राप्त, पी.एच्.डी. पंजाब विश्व विद्यालय, डी.लिट्. (जम्मू विश्वविद्यालय) शास्त्री (सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी व पंजाब विश्वविद्यालय, लाहौर) साहित्याचार्य (सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय) साहित्य–रत्न (साहित्य सम्मेलन प्रयाग)
व्यवसाय	–	अध्यापन, स्कूल स्तर –10 वर्ष, स्नातकोत्तर (संस्कृत) कक्षा 26½ वर्ष विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान व विश्वेश्वरानन्द संस्कृत व भारत भारती अनुशीलन संस्थान, पंजाब विश्वविद्यालय होशियारपुर, वहीं से रीडर पद से सेवानिवृत्त।
साहित्य	–	(संस्कृत) काव्य–लौहपुरुषावदानम् (महाकाव्य), भारत सन्देश, (संदेश काव्य) महावीरचरितम् (चरितकाव्य) गुरु रविदास शतकम् (चरितकाव्य), तरंगलेखा (मुक्तक संग्रह) अभिनवराग गोविन्दम् (मौलिक संस्कृत गीत–संग्रह) इन्दिरा–विलासः, वारुणी–महिमा, काम–कौतुकम्, आत्मबोधः, आर्यार्धशतकम्, मत्कुणायनम् (सं. व्यंग्यकाव्य) यं कामये तं तमुग्रं कृणोमि (अप्रकाशित), नाटक–(प्रकाशित) हूण–पराजयम्, मायापतिः, अजेयभारतम् (ध्वनिरूपक) केसरि चक्रमः (ध्वनिरूपक) मेघदूत नाट्यरूपान्तर (ध्वनिरूपक) पुरोधसः स्वप्नः (प्रहसन) साक्षात्कारः (भाण) नारदस्य दिल्लीयात्रा (भाण) स्वातन्त्र्य–सुखम् (प्रेक्षणक) वैतरणी (अप्रकाशित सामाजिक नाटक)।
उपन्यास	–	वन्धुजीवः (प्रकाशनाधीन) कहानियां – विविध पत्रिकाओं में प्रकाशित।
काव्य–शिक्षा	–	कविदिग्दर्शिका (अप्रकाशित)
निवन्ध	–	संस्कृत निवन्ध मणिमाला, संस्कृत निबन्ध रलाकरः।
समीक्षा	–	कालिदास–गरिमा (संस्कृत) काव्य शास्त्र में काव्य विम्ब विवेचन, कालिदासदर्शन, कालिदास–दर्पण
कोष–ग्रन्थ	–	अशोक मानक बृहत् हिन्दी शब्द–कोष, संस्कृत–हिन्दी–अंग्रेजी शब्दकोष।
हिन्दी काव्य	–	ढलके कण (कविता–संग्रह) अद्भुतशिल्पी (अप्रकाशित)
पुरस्कार	–	लौहपुरुषावदानम्, भारत–सन्देशः, त्रिपत्री, गुरुरविदास शतकम्, हूणपराजयम्, कालिदास–दर्शन, चन्द्रावती लखनपाल साहित्य–पुरस्कार।
सम्मान	–	मानवसंसाधन मन्त्रालय, केन्द्रीय सरकार द्वारा संस्कृत वर्ष के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय सम्मान, सरदार बल्लभभाई पटेल राष्ट्रीय स्मारक संस्थान, अहमदाबाद द्वारा नागरिक सम्मान, नागरिक परिषद, देहरादून–दून रत्न की उपाधि से सम्मानित, पञ्चनदीय संस्कृत परिषद, होशियारपुर, डी.ए.वी. कालेज, जालन्धर (संस्कृत विभाग) कृत विद्वत्सम्मान।